वर्षः 49 अंकः 1 28.02.2026 (जनवरी-फरवरी)

भगवत् कृपा

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम को पाये

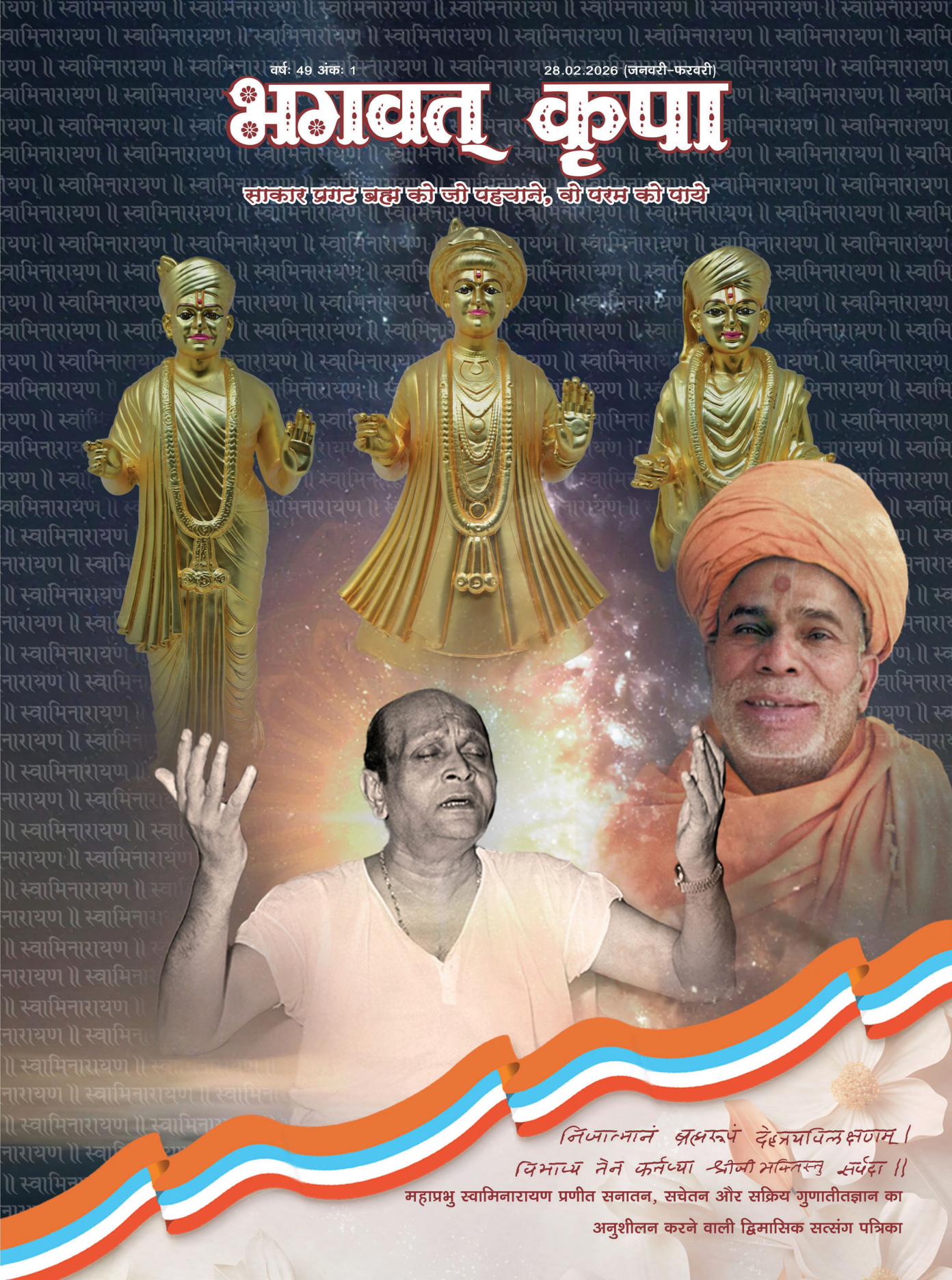

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् ।
विभाव्य तेन कर्तव्या श्रीजी भक्तिस्तु सर्वदा ॥

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

18 फरवरी 2026 फागुन शुक्ल प्रतिपदा

प.पू. गुरुजी की 89वीं प्राकट्य तिथि निमित्त सभा...

- गुरुजी ने विशेष रूप से इस बात पर ज़ोर दिया कि पूरा गुणातीत समाज एक है। उनका एक ही आग्रह है कि आपस में मिल-जुलकर रहना और एक-दूसरे के प्रति सुहृदभाव रखना ही सच्ची भक्ति है।
- गुरुजी का स्मरण करके, उनकी इच्छा व आज्ञा को संपन्न करने के लिए किसी भी कठिन से कठिन कार्य को करने लग पड़ेंगे, तो उनकी कृपा से वह भी सहजता से पूर्ण हो जाएगा।
- गुरुजी जैसे संत 'ब्रह्मस्वरूप' होते हैं। उनके सान्निध्य में आने के बाद जीव को सांसारिक हानि-लाभ की चिंता छोड़कर, 'बेफ़िक्र' हो जाना चाहिए, क्योंकि वे 'अंतर्यामी' हैं और सबकी सुरक्षा करते हैं।

प्राकट्य पर्व की दिव्य स्मृतियाँ...

पू. दमी मासी का उनके
70 वें जन्मदिन पर अभिनंदन...

फागुन में प्यारे गुरुजी प्रकटे, रंग श्रीजी का हमें लगाने...

हिंदू पंचांग का 12वां और अंतिम महीना फागुन (फाल्गुन) मास आनंद, उल्लास और आध्यात्मिक शुद्धि का समय माना जाता है। यह महीना पुराने साल की विदाई और नए जीवन की शुरुआत का प्रतीक होने के साथ-साथ शीत ऋतु के प्रस्थान और वसंत ऋतु के आगमन का संधि काल भी है।

प्रकृति की सौगात फाल्गुनी हवा से मौसम में बदलाव आने पर कपकपाती ठंड से राहत मिलती है। फलस्वरूप प्राणियों का मन उत्साह एवं उल्लास से भर जाता है। अति उत्साह विकृति का रूप न धारण करे, इसलिए फाल्गुन मास में अन्य देवी-देवताओं के साथ चन्द्रदेव की पूजा का भी विधान है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सभी प्राणियों के मन का नियंत्रण चन्द्रमा के द्वारा होता है। **'मन' ही मनुष्य के उत्थान-पतन का कारण है, जो चन्द्रमा के अधिकार क्षेत्र में आता है।** इसलिए फाल्गुन मास दौरान जगत में की जाती चन्द्रमा, शिवजी की पूजा और होलिकोत्सव मन की विकृतियों से व्यक्ति की रक्षा करती है। **लोक मान्यता के अनुसार तो केवल फाल्गुन मास में मन की चंचलता पर नियंत्रण करने के लिए ऐसे विधि-विधान बनाए गए हैं। परंतु, भगवान स्वामिनारायण ने तो जीवों पर अतिशय करुणा बरसाई कि उन्हें अपने गुणातीत संतों की दिव्य गोद में बिठा दिया। जिन्होंने अपने संसर्ग से प्राणीमात्र को मन के राज्य से छुड़वा कर, गुरु के राज्य में प्रवेश करा दिया।**

1937 की फागुन शुक्ल प्रतिपदा के मंगलकारी दिन प.पू. गुरुजी का प्राकट्य होना यही संदेश देता है कि श्रीजी महाराज के दूत गुरुहरि काकाजी महाराज को अखंड धार कर, उनके आश्रितों को मन के चंगुल से छुड़ा कर जीतेजी अक्षरधाम का सुख देना ही उनका युगकार्य है। ऐसे भगीरथ कार्य को गतिशील रखने वाले प.पू. गुरुजी की 89वीं प्राकट्य तिथि इस बार 18 फरवरी 2026 को आई। इस पावन अवसर पर सायं 7:00 बजे से कल्पवृक्ष हॉल में सभी ने एकत्र होकर श्री ठाकुरजी के समक्ष **प.पू. गुरुजी** के निरामय स्वास्थ्य के लिए प्रार्थना की। धुन के उपरांत प्राकट्य सभा का आरंभ करते हुए **पू. राकेशभाई शाह, पू. ऋषभ गोयल** और **सेवक पू. विश्वास** ने भजनों द्वारा भजनीक प.पू गुरुजी की दिव्यता-करुणा का गान किया।

तत्पश्चात् **पू.वत्सलस्वरुपस्वामीजी** ने भक्तिपूर्ण अभिव्यक्ति करते हुए **प.पू. गुरुजी** के लिए विशेष रूप से तैयार की गई **'हंस'** गाड़ी के निर्माण की यात्रा की जानकारी दी और इस कार्य में भक्तगण ने अपनेपन से जो साथ-सहकार दिया, उसके लिए उन्होंने धन्यवाद दिया।

साथ ही प्रार्थना करते हुए कहा– ***गुरुजी का स्मरण करके, उनकी इच्छा व आज्ञा को संपन्न करने के लिए किसी भी कठिन से कठिन कार्य को करने लग पड़ेंगे, तो उनकी कृपा से वह भी सहजता से पूर्ण हो जाएगा। जीवन के सभी कार्यों को पूरा करने का श्रेय केवल भगवान की शक्ति को दें, जो असंभव को संभव बना सकती है।*** *जब यह गाड़ी बन कर आई, तब* ***गुरुजी*** *ने आशीर्वाद लिख कर दिए थे–* ***भगवान और संत में मन निमग्न रहेगा तो अंतर के दोष कब टल जाएंगे, उसका पता भी नहीं चलेगा।***

पिछले साल ***साहेब दादा*** *जब गुरुजी का स्वास्थ्य देखने आए थे, तब उनसे पूछा था कि ऐसे बड़े सत्पुरुष बीमारी ग्रहण करते हैं तो उसकी क्या वजह है? उन्होंने समझाया था कि सेवकों के दोष टालने के लिए बीमारी ग्रहण करते हैं। उन्होंने ऐसा भी समझाया था कि* ***काम-क्रोधादिक दोष तो physical हैं। लेकिन, हमें संत या भक्तों का जो अभाव आता है, वो आत्मा से जुड़े दोष हैं, जिनसे छुटकारा पाना है।*** *गुरुजी आपसे यही प्रार्थना करनी है कि जैसे आपके आसन के पीछे लिखा है कि काकाजी तेरी मूर्ति निहारुं, उसी में लयलीन हो जाऊं... तो हे गुरुजी! आपकी मूर्ति निहारुं, उसी में लय-लीन करके आप सारे अंतर के दोष टाल देना...*

इसके बाद **सेवक पू. निमाई** ने आशीष याचना की–

- ***गुरुजी*** *ने विशेष रूप से इस बात पर ज़ोर दिया कि* ***पूरा गुणातीत समाज एक है।*** *उनका एक ही आग्रह है कि आपस में मिल-जुलकर रहना और एक-दूसरे के प्रति सुहृदभाव रखना ही सच्ची भक्ति है।*
- ***सत्संग में प्रगति के लिए अनिवार्य है कि दूसरों के दोष देखना (अभाव-अवगुण लेना) छोड़ें।*** *सबको निर्दोष मानना और गपशप (Gossip) से दूर रहना ही कल्याण का मार्ग है।*
- ***सेवा महिमा के भाव से करनी और हमेशा प्रभु को राज़ी*** *करने के लिए ही करनी।*
- *मेरी नींद बहुत गहरी हैं, त्यागी को ऐसा नहीं होना चाहिए। आज यही प्रार्थना कि आप ये सब टाल देना।*

तदोपरांत अनुपम मिशन से पधारे **साधु पू. दिव्येशदासजी** ने **प.पू. गुरुजी** के प्रति अटूट विश्वास रखने की प्रार्थना की। साथ ही, कल्पवृक्ष हॉल में प.पू. गुरुजी की ओर से लिखे गए सूत्र–'**आप यहाँ आए हैं, बस बेफ़िक्र हो जाइए...**' की महत्ता बताई–

*हम इसे दिल से स्वीकार लें, तो जीवन जीने में बहुत आनंद और निर्भयता आ जाएगी। **गुरुजी 'ब्रह्मस्वरूप' संत हैं। उनके सान्निध्य में** आने के बाद जीव को सांसारिक हानि-लाभ की चिंता छोड़कर, **'बेफ़िक्र' हो जाना चाहिए, क्योंकि वे 'अंतर्यामी' हैं और सबकी सुरक्षा करते हैं।***

मुक्तों द्वारा माहात्म्य गान के बाद, **पू. डॉक्टर दिव्यांग** ने **प.पू. गुरुजी** की **प्रागट्य तिथि** के शुभ अवसर पर बनाया **नया भजन** प्रस्तुत किया, जिसके प्रार्थना शब्द थे–

अपने से प्रीति करा के, फिर प्रभु की लगन लगा के
गुरुजी ने है धन्य कर दिया
इस दिव्य समाज में ला के, हमें अपना कुटुंबी बना के
गुरुजी ने है धन्य कर दिया...

भजन के उपरांत **प.पू. गुरुजी** ने हमेशा की तरह **श्रीजी महाराज** की स्तुति वंदना करते हुए आशीर्वाद देना आरंभ किया, तो इस बार सबसे पहले इस श्लोक का मर्म बताया–

*हम सब खूब भाग्यशाली हैं। क्यों? इस श्लोक में ही आता है– **'अंतर्धान थया नथी हरि तमे, गुणातीते छो प्रगट...'** अन्य कहीं भी देखेंगे, तो एक दीया जलता (विभूति पुरुष कार्य करते) हैं, लेकिन थोड़े टाइम के बाद वह बंद हो जाता है (दिव्य पुरुष के ब्रह्मलीन होने के बाद, उनके जैसा कोई तैयार नहीं हो पाता)। जबकि श्रीजी महाराज ने ऐसा रखा (वरदान दिया) है कि एक के बाद एक दिवेट (बाती) से दूसरा दीया जलता रहता है (एक के बाद दूसरी विभूति तैयार हो जाती है) और आगे भी भगवान की मूर्ति ऐसे माध्यमों से हर एक के जीवन में उजाला करती रहती है। **हमें ऐसी विभूतियों की तरफ ही नज़र रख कर, उस उजाले में ही हमें अपने आपको संरक्षित समझना, रखना और जीना है। संत के माध्यम से हम इस दिशा में सतत चलते रहें और प्रगति करते रहें। भगवान के स्वरूप को पा लेंगे; स्वयं भगवान रूप बन जाएं, तब भी हम इनके दास हैं, यह भूलें नहीं**– यही प्रार्थना।*

प.पू. गुरुजी से आशीष प्राप्ति के बाद, **सेवक पू. विश्वास** ने प्रार्थना करते हुए, प.पू. गुरुजी द्वारा समय-समय पर बताई भजन-धुन की महिमा को उजागर किया–

- *यदि हृदय से जगत की गंदगी या विकारों को निकालना है, तो प्रभु के भजन और नाम-स्मरण का प्रवाह इतना बढ़ा देना चाहिए कि अशुद्धियाँ अपने आप बह जाएँ।*
- *गुरुजी ने बहुत ही व्यावहारिक (Practical) उपदेश दिया कि यदि समय कम हो, तो भी **दिन भर में किए जाने वाले कार्यों को 'भगवान को राज़ी करने की भावना' से करना चाहिए।** ऐसा करने से साधारण कार्य भी सेवा बन जाती है। कार्य करने से पहले बस ग्यारह बार स्वामिनारायण नाम का स्मरण करो।*
- ***साधक को सदैव जागरुक रहकर अपनी कमियों को देखना चाहिए** और उन्हें दूर करने के लिए धुन करके संत से प्रार्थना करनी चाहिए, **ताकि 'ब्राह्मीस्थिति' प्राप्त हो सके।***

*एक बार हमने **गुरुजी** से पूछा–आपका क्या अभिप्राय है? आप हमसे क्या करवाना चाहते हैं? उन्होंने कहा–तुम सब मिलजुल के रहो। **तुम सब दिल्ली वाले ही आपस में मिलजुल कर रहो ऐसा नहीं, बल्कि पूरा गुणातीत समाज एक है। यह पवई, अनुपम मिशन, दिल्ली या शिकागो का है, ऐसा नहीं होना चाहिए। पूरा गुणातीत समाज एक है। तो, सब ऐसे मिलजुल के रहते हो जाएँ, वही मेरी भावना-मेरा अभिप्राय भी है।***

*आज गुरुजी के प्रागट्य दिन पर प्रार्थना है कि गुरुजी, आप हम सबका जो **आंतरिक सुहृदभाव** दृढ़ कराना चाहते हैं, वह सहजता से हो जाए–आप आज ऐसे आशीष देना...*

*अभी **15 फरवरी 2026–महाशिवरात्रि** के दिन गुरुजी **अक्षरज्योति** गए थे। **गुरुजी** ने वहाँ पर आशीर्वाद देते हुए कहा–**हम खुद को project न करें। हमेशा काकाजी को ही आगे रख के जिएँ।***

*इस कल्पवृक्ष हॉल में जामुन के पेड़ का पूजन करते हुए काकाजी की मूर्ति लगी हुई है। परसों ही गुरुजी उस पर लिखे हुए **काकाजी** के आशीर्वाद पढ़वा रहे थे–*

यहां का मंडल तुम्हारा (प.पू. गुरुजी) खूब साथ देगा। गुणातीत ज्ञान का संदेश दिल्ली से भी विश्व में फैलेगा, ऐसे शुभाशीष हैं। शर्त सिर्फ़ सद्भाव, सुहृदभाव और जोड़ में काम करने की है...

तुम्हें अब मैं स्वतंत्रता देता हूँ। मुझे भी मत पूछो। तुम्हारे हृदय में प्रभु अखंड हैं। तुम लायक हो, पात्र हो। कितना ही मान मिले पर वह बापा का है, उनके संकल्प का है। इसी भावना के साथ हरिप्रसादजी, पप्पाजी और काकाजी को आगे रख कर तुम जब भी पुकार करोगे, तो भगवान तुम्हारा भी सुनेंगे। अब से तुम भी स्वतंत्र काम करो, मिल जुलकर करो।

तो, इस आशीर्वाद में भी काकाजी ने स्वरूपों को आगे रख कर सुहृदभाव, मिलजुल कर काम करने की बात करी है। ऐसा नहीं कि गुरुजी कोई भी बात ऐसे ही कर देते हैं या कोई भी आशीर्वाद ऐसे ही दे देते हैं। पहले वे खुद वैसा जीते हैं। गुरुजी ने अपने आपको हमेशा पीछे रखा और हमारे जीवन में काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी को इतना भर दिया है... गुरुजी हमेशा अपनी बातों में कहते भी हैं कि ***काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, 3 फरवरी पार्क उन्होंने इसीलिए नाम रखवाया कि भविष्य में हम सिर्फ़ गुरुजी-गुरुजी न कहते रहें।*** *यदि गुरुजी-गुरुजी करेंगे, तो कोई समझदार तो पूछेगा कि तुम गुरुजी-गुरुजी कह रहे हो, तो यह काकाजी लेन, 3 फरवरी पार्क क्या है? ऐसे वह practical हैं और ऐसी छोटी-छोटी चीजों में हमें बहुत कुछ सिखाते हैं।*

आज गुरुजी के प्रागट्य दिन पर उनके श्री चरणों में यही प्रार्थना कि हमारा आंतरिक सुहृदभाव दृढ़ हो जाए, हमें भजन की लगनी लग जाए और ***आपके सिवा जीवन में कुछ भी न रहे...***

यूँ सेवक विश्वास ने सभी की ओर से प.पू. गुरुजी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की और उनके द्वारा सिखाए गए सुहृदभाव व निस्वार्थ सेवा के आदर्शों को जीवन में उतारने का प्रण लिया।

सभा के अंत में **प.पू. गुरुजी** के प्राकट्य निमित्त अक्षरज्योति की बहनों द्वारा सभी की ओर से बनाया गया विशेष हार **पू. परिवेश शर्मा** और **पू. मेहुलभाई माणेक** ने मिलकर **प.पू. गुरुजी** को अर्पण किया। अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए **प.पू. गुरुजी** ने प्रसादी का यह हार **प.पू. दीदी** के लिए भिजवाया। मुंबई निवासी **पू. अनिलभाई माणेक** की धर्मपत्नी **पू. दमी बहन** का आज **70वाँ जन्मदिन** था। सो, प्रसादी का हार उन्होंने प.पू. दीदी को अर्पण किया। तभी अंतर में प्रभु प्रेरणा से प.पू. दीदी ने यह हार **पू. मेहुलभाई माणेक** व उनकी पत्नी **पू. पूजा** को पहना कर श्री ठाकुरजी से आशीर्वाद दिलवाया। साथ ही, प.पू. दीदी ने **पू. दमी मासी** को उनके **70वें जन्मदिन** निमित्त हार पहना कर मंगल स्मृति दी। तत्पश्चात् विसर्जन प्रार्थना से उत्सव का समापन हुआ और सभी ने प्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

मुंबई में प.पू. भरतभाई के 72 वें प्राकट्योत्सव का शुभारंभ...

पू. अनिलभाई माणेक के घर...

प्रासादिक स्थल 'ताड़देव' के दर्शनार्थ एवं मुक्तों के घर पधरावनी...

पू. रमेशभाई महेता

पू. राजश्री बहन शाह

पू. भरतभाई-पू. भारती बहन परीख

पू. केयुरभाई अध्वर्यु-पू. दीप्ति बहन, पू. नंदिनी बहन

पू. संजीवभाई वोहरा

पू. डॉ. उपेन्द्रभाई पटेल

पू. सनिल के रेस्तरां 'सेज'

पू. ओ.पी. अग्रवालजी

31 जनवरी 2026 - प.पू. भरतभाई के प्राकट्योत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

प.पू. भरतभाई के 72 वें प्राकट्योत्सव एवं 3 फरवरी – गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की 74 वीं वर्षगाँठ तथा दिल्ली मंदिर के 32 वें पाटोत्सव की दिव्य स्मृतियाँ...

गुरुहरि काकाजी महाराज के कृपा पात्र ताड़देव के योगेश्वरों से प.पू. गुरुजी का ऐसा अटूट संबंध है कि अधिकांशतः पिछले वर्ष तक वे प.पू. भरतभाई और प.पू. वशीभाई के प्राकट्य पर्व पर सबको दर्शन देने मुंबई जाते रहे। परंतु, अब उनके स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए डॉक्टर्स ने इतनी दूर का सफ़र करने के लिए उन्हें फिलहाल मना किया है। सो, प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **प.पू. आनंदी दीदी** कुछ बहनों, सेवकों के साथ **प.पू. भरतभाई के प्राकट्य पर्व** हेतु **28 जनवरी 2026** की सायं flight से मुंबई airport पहुँचीं। वहाँ **प.पू. माधुरी बहन** व बहनें तथा मुंबई के **स्थानिक हरिभक्त** स्वागत करने आए थे। प.पू. दीदी ने सेवकभाव से पहले ही फोन पर प.पू. भरतभाई से प्रार्थना कर ली थी कि वे airport आने का परिश्रम न उठाएँ। सो, प.पू. दीदी की विनती स्वीकार कर वे नहीं आए थे। यहाँ से सब पवई मंदिर गए। वहाँ **प.पू. भरतभाई** एवं **प.पू. वशीभाई** के सान्निध्य में नित्य सभा हो रही थी और **प.पू. दिनकर अंकल** कहीं पधरावनी करने गए थे। पूजन से प.पू. दीदी व सभी का अभिवादन किया गया। प.पू. भरतभाई के आदेश पर **प.पू. दीदी** ने गुरुहरि काकाजी महाराज एवं स्वरूपों की स्मृति करते हुए निम्न आशीष दिए –

*भरतभाई के प्रागट्य दिन निमित्त मुंबई आने का programme बना। हर बार तो गुरुजी surprise देते ही हैं, लेकिन अब health के कारण उनका programme नहीं बना, तो हमें काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने और आप सबके दर्शन करने का मौका मिल गया... **गुरुजी** की तबीयत वैसे stable है और सब भजन प्रार्थना करते रहेंगे, तो महाराज ज़रूर और भी अच्छा कर देंगे। **मानव स्वरूप में आए हैं, तो age अपना काम करती है, बाकी ब्रह्मतत्त्व को age नहीं होती है। उन्हें जहाँ कार्य करना है, वहाँ वे कर ही रहे हैं।** दो तीन दिन पहले पानीपत से अंजलि भाभी और पुनीत भइया आए थे। पुनीतजी ने गुरुजी को बताया कि वे लोग मार्च में Norway घूमने जाने का सोच रहे हैं। **पुनीतजी के जीवन में सत्संग की ही priority है,** तो*

गुरुजी को बता कर ही जीवन में सब कुछ करते हैं। यह सुन कर गुरुजी एकदम बोले—साथ में Sweden भी जाकर आना। पुनीतजी को sweden का ख्याल नहीं था, लेकिन उन्होंने घर जाकर map में देखा, तो sweden शायद Norway के नज़दीक ही है। उन्होंने अंजलि भाभी से कहा कि हम surface level पर देखते हैं कि गुरुजी तो अब भूल जाते हैं, अब पहले की तरह बात नहीं करते, जबकि on the spot बोले कि Sweden भी ज़रूर जाकर आना। यह हमारा नज़रिया कहा जाए कि ***हम जिस भी स्वरूप से जुड़े हैं, उन्हें यदि प्रभु का स्वरूप मानेंगे, तो वे हमें वैसी ही प्रतीति करायेंगे****...*

भरतभाई के birthday से मेरी काकाजी के साथ की बहुत अच्छी स्मृति जुड़ी हुई है। 1986 जनवरी में गुरुजी के पास काकाजी का message आया कि आनंदी, स्मिता, गौरी, स्वाति पहले बॉम्बे आ जाएँ और यहाँ से उनके साथ गुजरात में गुणातीतानंदस्वामीजी की द्विशताब्दी महोत्सव में जाएँ। तो, हम काकाजी के साथ बड़ौदा-हरिधाम के function में गए। फिर 26 जनवरी को गुणातीत ज्योत में काकाजी का साक्षात्कार दिन मनाने के बाद नापा गए। काकाजी ने वहाँ गुरुजी से कहा कि गुड्डी को मैं अपने साथ वापिस बॉम्बे ले जाता हूँ। तो, बाकी सब दिल्ली लौट गए और मुझे व स्मिता दीदी को काकाजी specially ताड़देव लेकर आए। सत्संग की बातें ज़्यादा बहुत deep में समझ नहीं आती थीं, लेकिन ***काकाजी*** *के सान्निध्य-दर्शन का खूब लाभ मिला। उस दौरान उन्होंने मुझे कहा—****गुड्डी अब तुम जल्दी तैयार हो जाओ, मुझे छलाँग लगानी है।*** *हमें तो ऐसा लगा कि सत्संग बहुत बढ़ जाएगा और काकाजी शायद हमें ज़्यादा नहीं मिलेंगे, वो छलांग लगाने की बात कर रहे हैं। तब भरतभाई के birthday पर शायद 31 जनवरी को पवई में यज्ञ का आयोजन था। यज्ञ के दौरान हम सब काकाजी के सामने बैठे थे, तो वे अपने आसन से थोड़ा उठ कर 'मुकुंद, मुकुंद, मुकुंद, मुकुंद' बोल कर मेरी तरफ़ इशारा कर रहे थे। उन्होंने ख्याल दिया कि मुझे ऐसा पता है कि तू भले यहाँ बैठी है, लेकिन तेरा ध्यान-mind तो दिल्ली में गुरुजी की ओर ही है। शाम को पवई में स्टेज पर भरतभाई के प्रागट्य दिन निमित्त काकाजी को केक अर्पण किया। हम नीचे बैठे थे, तो मुझे और स्मिता दीदी को स्टेज पर बुला कर अपने हाथ से केक खिलाया। तब ऐसा पता नहीं था कि मार्च में तो काकाजी स्थूल रूप से नहीं होंगे। तो, काकाजी ने भरतभाई के birthday की ये permanent स्मृति हमें दी थी।* ***4 फरवरी*** *को दिनकर दादा शिकागो जा रहे थे, तो काकाजी ने उन्हें शास्त्रीजी महाराज की अस्थि देते हुए कहा कि वहाँ किसी भी भक्त को कोई problem आए, तो इसे पानी*

में डुबो कर प्रासादिक जल उसे देना। तब ताड़देव में ठाकुरजी के पास एक गजरा रखा था, तो ***मुझे अपने पास बुला कर काकाजी ने ठाकुरजी की प्रसादी का गजरा दिया।*** *काकाजी के साथ ताड़देव की इस स्मृति का same gesture भरतभाई ने यहाँ पवई में कुछ साल पहले किया था। Function पूरा होने के बाद सब भरतभाई से मिल रहे थे और उस समय उन्होंने अपने हाथ में गजरा रखा हुआ था। भरतभाई से काकाजी के साथ के प्रसंग के बारे में मेरी कभी बात भी नहीं हुई थी। अधिकतर भक्तों के जाने के बाद* ***भरतभाई मेरे पास आए और मुझे वो गजरा दिया। तब मुझे एकदम यह प्रसंग तो याद आया ही, साथ ही दृढ़ प्रतीति हुई कि तत्त्व से काकाजी आज भी गुरुजी, दिनकर दादा, भरतभाई, वशीभाई द्वारा हमारे लिए अखंड कार्य कर रहे हैं। हमारे सिर्फ़ मानने–विश्वास रखने की ही बात है। ये लोग हमारे लिए खूब सस्ते बने हैं, इसलिए हम उन्हें पहचान नहीं पाते।*** *मैं दिल्ली में भी अकसर बात करती हूँ कि बहुत समय निकल गया है, पर अब बिलकुल भी समय व्यर्थ करने जैसा नहीं है। हमारी एक-एक second बहुत costly है।*

ये स्वरूप बहुत सामान्य बन कर रहते हैं। पिछले साल जुलाई में वशीभाई के जन्मदिन निमित्त गुरुजी मुंबई आए और इगतपुरी भी गए थे। वहाँ सभा के बाद सबने प्रसाद लिया। भरतभाई से थोड़ी ही दूर मैं खड़ी थी। मैंने देखा कि भरतभाई साथ में आए माधुरी दीदी इत्यादि को गाड़ियों की setting के बारे में बता रहे थे कि दिनकर दादा की गाड़ी में ये जाएँगे और एक गाड़ी में ये सब जाएँगे। ये सुन कर मन में ऐसा हुआ कि ***भगवान के स्वरूप होकर भी कितने low level पर ये हमारे साथ हमारी कक्षा पर वर्तते हैं... जबकि इन्होंने काकाजी के साथ ऐसा जीवन जिया है कि आज हमारे लिए वे काकाजी स्वरूप ही बन गए हैं।***

3-4 दिन पहले विश्वास ने गुरुजी से पूछा कि पहले आपको मूली देखनी भी पसंद नहीं थी, लेकिन आप तो मूली बहुत शौक़ से खाते हैं। फिर उन्होंने बताया कि काकाजी को मूली बहुत पसंद थी, इसलिए मैंने खानी शुरू की। उनके कहने का तात्पर्य यह था कि ये बात सिर्फ़ कहने में न हो कि महबूब की हर चीज़ महबूब होती है। ***मूली जैसी स्थूल चीज़ पसंद करके गुरुजी बताना चाहते हैं कि हमें मिले स्वरूप के संबंध वाले मुक्त जो कभी नहीं जँचते हैं, तो उनके प्रति हमें ऐसा भाव नहीं होना चाहिए। उनके संबंध वाले हमें प्रिय होने ही चाहिएँ, वे हमें ऐसा जीकर बताते हैं। ऐसी छोटी–छोटी चीज़ों से इन्होंने काकाजी को राज़ी कर लिया है और आज उनके ही स्वरूप बन गए।***

अभी रूमला गोलार में जो भजन संध्या हुई, उससे काकाजी कितना राज़ी होते होंगे। भीड़ ज़्यादा थी, वो महत्त्व की बात नहीं है लेकिन आज दिनकर दादा, भरतभाई, वशीभाई ने कैसे काकाजी को प्रगटाया है, उसका दर्शन हुआ। काकाजी कहते थे— समागम करो... तो अब हम समय की नज़ाकत समझ कर, गुणातीत स्वरूपों से प्राप्त आशीर्वाद को आत्मसात् करके वर्तने लगें। ***पप्पाजी कहते — वर्तन बातें करेगा और वशीभाई हमेशा कहते हैं कि हमें देख कर हर कोई सोचे, कैसे होंगे काकाजी! वैसा आप हमें बना दीजिए।***

प.पू. राजुभाई ठक्कर पिछले तीन महीने से अस्वस्थ थे, सो सभा के पश्चात् प्रसाद लेकर प.पू. दीदी एवं सभी उनसे मिलने गए। यहाँ धुन करने के पश्चात् **प.पू. दिनकर दादा** का दर्शन करके, **पू. अनिलभाई माणेक** के घर घाटकोपर जाने के लिए रवाना हुए। यहाँ भी **पू. दमी बहन, पू. भूमि भाभी** व **पू. पूजा भाभी** ने पूजन करके स्वागत किया। दिल्ली मंदिर के हरिभक्त **पू. राजुभाई शाह** के सुपुत्र **पू. राहुल शाह** भी अपनी पत्नी **पू. सोनल** के साथ प.पू. दीदी का दर्शन करने आए थे। अगले दिन यानी 29 जनवरी को **पू. मिलनभाई-पू. भूमि भाभी** की **शादी की वर्षगाँठ** थी, सो रात के बारह बजे श्री ठाकुरजी को केक अर्पण करके आशीर्वाद व प्रसाद लिया। रात को प.पू. दीदी व सभी यहीं पर ठहरे।

29 जनवरी की सुबह प.पू. दीदी की नित्य पूजा में सबने धुन का लाभ लिया। दिल्ली मंदिर के हरिभक्त **पू. परेशभाई मेहता** की पत्नी **पू. बीजल भाभी** के पिता **पू. रमेशभाई महेता** घाटकोपर में ही रहते हैं। वे दोनों अपनी छोटी बेटी **पू. आज्ञा** के साथ यहाँ आए हुए थे। पू. अनिलभाई माणेक के घर नाश्ता करने के बाद, प.पू. दीदी पू. रमेशभाई मेहता के घर पधरावनी करने गईं। यहाँ धुन-भजन करके, गुरुहरि काकाजी महाराज के प्रासादिक स्थल **'ताड़देव'** के लिए रवाना हुए। **प.पू. वशीभाई, प.पू. माधुरी बहन** इत्यादि पहले से वहाँ पहुँचे हुए थे। श्री ठाकुरजी के हाल में प.पू. वशीभाई ने ताड़देव मंदिर के इतिहास की बातें बताईं। प.पू. माधुरी बहन ने प.पू. दीदी को हार अर्पण करके अभिवादन किया और प.पू. वशीभाई ने स्मृति भेंट दी। फिर गुरुहरि काकाजी महाराज के कमरे में बैठ कर प.पू. दीदी के साथ सबने धुन-प्रार्थना की।

दिल्ली मंदिर के हरिभक्त **पू. कीर्तिभाई जानी-पू. शोभना भाभी** के संबंध से **1993** में मौके की सेवा करके, प.पू. गुरुजी व प.पू. दीदी से आत्मीयता से जुड़ी **पू. सोहिणी बहन शाह** सपरिवार ताड़देव के नज़दीक **'ऑपेरा हाऊस'** क्षेत्र में रहती थीं। प.पू. दीदी के मुंबई आने से दो दिन पहले ही **26 जनवरी 2026** की रात को, जीवनपर्यंत सत्संग को प्राथमिकता देकर जीतीं **पू. सोहिणी बहन अक्षरनिवासी** हो गईं थी। सो, ताड़देव मंदिर से प.पू. दीदी वहाँ गईं।

वहाँ उपस्थित पू. सोहिणी बहन की पुत्रवधू **पू. राजेश्री भाभी**, पौत्र **पू. प्रणय**-पौत्रवधू **पू. आरती**, पौत्री **पू. तन्वी**, बड़ी बेटी **पू. अनुपमा भाभी**-दामाद **पू. श्रेयसभाई व्यास** तथा छोटी बेटी **पू. सोनाली** को इस दुःख की घड़ी में धुन-भजन से बल प्रदान किया। प.पू. दीदी ने आश्वस्त किया कि पू. सोहिणी बहन ने सत्संग को अपने जीवन में बसा कर न केवल अपना जीवन धन्य किया, बल्कि पूरे परिवार को उन्होंने सत्संग की धरोहर प्रदान की है। यहाँ से प.पू. दीदी इसी बिल्डिंग के दूसरे तल पर रहते **पू. भरतभाई परीख-पू. भारती बहन** के घर गईं। पू. सोहिणी बहन के ज़रिये कई वर्षों से ये दंपति दिल्ली मंदिर से सद्भावना से जुड़े हुए हैं। प.पू. दीदी बहुत साल के बाद इनके यहाँ गईं। यहाँ भी पू. सोहिणी बहन के जीवन से जुड़ी यादें ताज़ा करके-धुन करने के बाद प.पू. दीदी Nepean Sea Road गईं। यहाँ सबसे पहले अक्षरनिवासी **पू. राजनभाई अध्वर्यु-पू. नंदिनी बहन की बड़ी बेटी पू. सांची-दामाद पू. आर्ष वोहरा** के घर पधरावनी करने गए। पू. आर्ष के माता-पिता **पू. पूनम बहन-पू. संजीवभाई वोहरा** की हार्दिक इच्छा थी कि प.पू. दीदी उनके यहाँ आए। खूब भाव से उन्होंने आवभगत की। धुन करने के पश्चात् प.पू. दीदी व सभी यहाँ से **पू. नंदिनी बहन, पू. केयुरभाई अध्वर्यु-पू. दीप्ति बहन** के घर Nepean Sea Road गए। कमर की तकलीफ़ के कारण पू. दीप्ति बहन को डॉक्टर ने तीन महीने rest करने को कहा है। सो, उनके शीघ्र स्वस्थ होने के लिए प.पू. दीदी ने धुन कराई। पू. दीप्ति बहन के छोटे बेटे **पू. द्विज** का रिश्ता पक्का हुआ है, सो उसकी मंगेतर **पू. उपासना** भी अपने परिवार के साथ प.पू. दीदी का दर्शन करने आई थी। प.पू. दीदी ने श्री ठाकुरजी के आशीर्वाद रूप माला उसे भेंट में दी। **पू. आनंद व्यास** भी पत्नी **पू. पारुल** और बेटी **पू. माही** के साथ आए थे। South मुंबई के मुक्तों के घर पधरावनी करने के पश्चात् रात को प.पू. दीदी घाटकोपर पू. अनिलभाई माणेक के घर लौटीं।

30 जनवरी की सुबह नित्य पूजा के पश्चात् नाश्ता करके, प.पू. दीदी ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी के कृपा पात्र एवं प.पू. गुरुजी से अपनेपन से जुड़े **पू. डॉ. उपेन्द्रभाई पटेल** के घर जाने के लिए रवाना हुए। करीब डेढ़ घंटे का सफ़र तय करके **दहीसर** उनके घर पहुँचे। डॉ. उपेन्द्रभाई की पत्नी **पू. कल्पना बहन, सुपुत्र पू. डॉ. योगेन** ने भाव से अभिनंदन किया। यहाँ धुन-भजन और प्रसाद लेकर, अंधेरी-लोखंडवाला रहते **पू. ओ.पी. अग्रवालजी** के घर जाने निकले। यहाँ परिवारजन के साथ प.पू. दीदी ने गोष्ठी की। इसी दौरान करीब पौने घंटा light चली गई। Light न होने के कारण lift नहीं चल रही थी, फिर भी इस अंधेरे में mobile

की रोशनी में पू. ओ.पी. अग्रवालजी के पौत्र **पू. आत्मन्** की हिन्दी tution teacher **पू. सरिता दुबे** अपने पति के साथ **14 मंज़िल चढ़ कर,** प.पू. दीदी से मिलने आईं। तब **प.पू. गुरुजी और प.पू. दीदी की गरिमा का एहसास हुआ कि उनके संबंध से पू. आत्मन् ने अपने व्यवहार से अपनी teacher को सत्संग का कैसा परिचय दिया होगा!** Light आने के बाद प.पू. दीदी व सभी **पू. अनिलभाई भिन्डे-पू. काश्मीरा भाभी** के सुपुत्र **पू. सनिल** के रेस्तरां **'सेज'** गए। पू. सरिता दुबेजी भी अपने पति के साथ प.पू. दीदी के साथ गईं। यहाँ भोजन करके घाटकोपर पू. अनिलभाई माणेक के घर लौटे।

31 जनवरी की सुबह **पू. अनिलभाई माणेक के कुछ सगे-संबंधी, पू. श्रेयसभाई व्यास-पू. अनुपमा भाभी**, अक्षरनिवासी **पू. प्रफुल्लभाई झवेरी** के सुपुत्र **पू. चेतन** अपनी पत्नी के साथ प.पू. दीदी के दर्शन हेतु आए।

शाम को **'मेगारगस बैंकेट्स'**-चांदीवली, **पवई** में **प.पू. भरतभाई** के **72वें प्राकट्योत्सव** का लाभ लेने गए। सत्संग के युवाओं के **भक्तिनृत्य** तथा **पू. विजयस्वामीजी** के वसंतगान से उत्सव का मंगल प्रारंभ हुआ। **भुलकुं पू. हैरत, साधु पू. हर्षितदासजी, आस्ट्रेलिया के पू. संजयभाई विहारिया, पू. रमेशभाई त्रिवेदी, पू. हेमंतभाई मर्चंट, हरिधाम के पू. मणीभाई तथा पू. राकेशभाई शाह** ने प्रार्थना शब्दों से तथा **संभाजी नगर** के युवाओं ने **भावनृत्य** द्वारा प.पू. भरतभाई के प्रति भक्ति अदा की। **प.पू. गुरुजी** की ओर से भेजा निम्न आशीर्वाद संदेश का पठन **पू. राकेशभाई** ने किया।

ગુરુહરિ કાકાજીના મુખનો પાન પૂજ્ય ભરતભાઈ...
તમોએ જેમ કાકાજી, પપ્પાજી, સ્વામીજી અને સહુ સ્વરૂપોને રાજી કર્યા
એમ સહુ કરી શકે એવી આજના મંગલકારી દિવસે પ્રાર્થના...

आनंद के इस उत्सव में **गुणातीत स्वरूपों-वरिष्ठ संतों** ने निम्न आशीर्वाद देकर सबको निहाल किया।

प.पू. वशीभाई

आज त्रिवेणी संगम पर भरतभाई के लिए सब इतने भाव से आए, तो खूब धन्यवाद। शास्त्रीजी महाराज को याद करें, तो बहुत कम समय में छः गगनचुंबी मंदिर कैसे बाँधे होंगे? दूसरा— लोगों का आयुष्य 75 वर्ष तक नहीं होता, जबकि निर्मलस्वामी को दीक्षा लिए 75 साल हो गए!

*...काकाजी का साठवाँ जन्मदिन षणमुखानंद हॉल में मनाया था। तब **काकाजी बोले कि ये सब जो नज़ारा है, वो शास्त्रीजी महाराज और बापा की कृपा का फल है। फिर यह भी बोले थे कि***

जिस हेतु से बापा ने हमें दूर किया, वो हमारी नज़र समक्ष constantly रहना चाहिए। आज भी ये नज़ारा काकाजी की मेहनत का फल है। *मैं और भरतभाई 1972-73 से काकाजी के पास रहने आए।* ***1986 तक काकाजी के साथ रहे, उन 14 सालों में देखा कि भरतभाई की नज़र सिर्फ़ काकाजी की ओर रही...*** *एक बार लोनावाला में शिबिर हुई। वहाँ से पुणे नज़दीक है, तो काकाजी सहज बोले कि आप भी सबके साथ घूम के आओ। तो भरतभाई बोले–मुझे नहीं जाना, मुझे आपके साथ ही रहना है। काकाजी खूब राज़ी हो गए। भुलकुं हैरत ने जो श्लोक मुखपाठ किए, ये सब भरतभाई के संस्कार है...*

काकाजी हमें भरतभाई के जीवन से स्थिरता सिखाते हैं, that we have to rise to the occasion and become a mature leader. बापा ने भी काकाजी को 1952 से 1966 के दौरान ऐसा बनाया। दिल्ली में गुरुजी कैसा ज़बरदस्त काम कर रहे हैं। तो हम ऐसे बने that we become the introduction of God, introduction of Kakaji... अपनी आनंदी दीदी सदाबहार, उनको शरीर की तकलीफ़ बाधित नहीं होती, ever fresh ever smiling... सांकरदा में project का काम जारी है, फिर भी 78 की उम्र में बापूस्वामी यहाँ आए हैं... *सबका नया साल सुखदायी बने। हिंदुस्तान का भी भावी अच्छा होता रहे-सर्वेत्र सुखिनः संतु...*

प.पू. भरतभाई

हम निर्मलस्वामी से मिलने गए थे, तो बातों-बातों में उन्होंने बताया कि उन्हें दीक्षा लिए 75 साल हो गए। इतनी लंबी आध्यात्मिक यात्रा... गुरुजी ने भी दीदी और भक्तों को भेजा, राकेशभाई ने गुरुजी का आशीर्वाद पढ़ा... आनंदी दीदी से बात हो रही थी कि ***महाराज ने हमें अक्षरधाम से अपने-अक्षरपुरुषोत्तम के कार्य, शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज के कार्य को आगे बढ़ाने का यत्किंचित् प्रयास करने के लिए भेजा है।*** *हम अक्षरधाम के हैं, इसलिए अक्षरधाम के मुक्तों से मिलकर आनंद होता है...*

संबंध वाले कैसे भी हों, वो हमें जँचे। अनुपम मिशन के अश्विन दादा हमेशा कहते हैं कि साहेब और साहेब के प्यारे सब दिव्य मुक्तों–यानी साहेब की पसंद के जो मुक्त हैं, वो मुझे जँचते हैं। उनकी जगह हमें तो ऐसा होता है कि भले उन्हें पसंद होगा, पर मुझे पसंद नहीं है। मैं उनसे बात नहीं करता, मैं उनके साथ संबंध नहीं रखूँगा। तो, ***हमें निश्चय करना है कि मैं जिस स्वरूप को मानता हूँ, उनकी पसंद वाले सब मुझे भी पसंद हों।*** *आनंदी दीदी ने 28 तारीख को बताया था कि पहले गुरुजी को मूली बिलकुल पसंद नहीं थी, पर बाद में वे चाव से मूली खाने लगे।*

किसी ने पूछा कि आपको तो पसंद नहीं है न? तो वे एकदम बोले—काकाजी को पसंद थी, इसलिए मुझे पसंद है। ऐसे ही ***स्वरूप की जो मरज़ी, उनकी जिस पर प्रसन्नता हो, उनकी जो likings हो, वो मेरी likings बन जाएँ। तुम दिन को अगर रात कहो, तो रात मानें...***

मैं अकसर सोचता हूँ कि ***काकाजी*** *ने एक partiality रखी कि मुझे कभी डाँटा नहीं, कुछ कहा नहीं। उनके पास जब नया-नया आया, तभी से वे कहते थे—* ***तुम्हारा ज्ञानयज्ञ और योगयज्ञ पूरा हो गया...***

एक बार बैठे-बैठे कुछ सोच रहा था, तो काकाजी बोले—देखो, कभी चिंता नहीं करना। तुम्हें 11 रुपये की ज़रूरत होगी, तो सौ रुपये कहीं से आ जाएँगे। ***काकाजी के स्थूल देह से जाने के बाद इन चालीस सालों में कभी ऐसा नहीं हुआ कि आज पैसा कैसे लाओगे?*** *पवई मंदिर के इस project के बारे सोचें, तो मैंने ख़ाली बोला कि बनाना है। लेकिन,* ***साहेब, गुरुजी, प्रेमस्वामी, निर्मलस्वामी, दिनकरभाई, वशीभाई, राजूभाई, हरखचंदभाई, अश्विनभाई और सभी संतों बहनों का आशीर्वाद मिला कि यह कार्य होगा। बहुत भक्तों ने अपना सर्वस्व दिया है, उसके लिए उन्हें धन्यवाद...***

...रामजी ने हनुमानजी को मोती की मूल्यवान माला दी, तो वो उसे तोड़ कर देखने लगे कि इसमें राम हैं या नहीं हैं? उन्होंने कहा कि यदि इसमें राम नहीं, तो मुझे नहीं चाहिए। ऐसे ही हर कार्य करते हुए सोचना कि इसमें मेरे प्रभु राज़ी होते हैं? अभी ***महंतस्वामी ने अपनी बातों में बताया कि 8 अरब की दुनिया में यदि कोई हमें दुःखी करने वाला है, तो वो हमारा स्वभाव है। उसे टाले बिना सुखी होना तो असंभव है। तो, प्रार्थना है कि हमारा जो कोई inherent nature-प्रकृति आपको प्रसन्न करने में बीच में आता है, वो टल जाए।*** *भुलकुं हैरत ने जैसे बोला कि हम जो तय करें उसमें consistency होनी चाहिए...* ***निर्मलस्वामी के जीवन से पता चलता है कि साधु को Ever positive भाव और एक ही आचरण से जीवनभर रहना चाहिए...***

प.पू. दिनकर अंकल

आज जनवरी महीने के अंतिम दिन शास्त्रीजी महाराज का प्रागट्य दिन और उनके लाड़ले ***निर्मलस्वामी का आज पचहत्तरवाँ दीक्षा दिन, जिन्होंने उनसे आठ साल की उम्र में कंठी पहनी। उनकी चेतना पहचान कर उन्होंने बापा को आदेश दिया कि ये साधु बनने वाले हैं। काकाजी को हुए साक्षात्कार के भी वे साक्षी हैं।*** *हमारे समाज के लिए काकाजी की वे भेंट हैं। उन्होंने काकाजी, पप्पाजी, स्वामीजी को गुरु पद पर स्वीकार किया और वैसे ही साहेब, अक्षरविहारीस्वामी और*

गुरुजी के साथ दिव्यभाव से प्रशंसा करते हैं। इससे भी आगे, स्वामीजी के अक्षरवास के बाद प्रेमस्वामी से भी उतने ही दिव्यभाव से जुड़े और उनकी आज्ञा में पल-पल वर्त कर जहाँ जाना हो, वहाँ पहुँच जाते हैं...

भरतभाई का birthday काकाजी का चौथा happiest day है। उनका पहला happiest day शास्त्रीजी महाराज के साथ चंदन अर्चा का दिन, दूसरा बापा द्वारा कराया साक्षात्कार दिन, तीसरा ये बापा को हम पर कितना भरोसा होगा कि बहनों का कार्य करने के लिए संस्था से अलग किया। *आज विद्यानगर, हरिधाम, दिल्ली, सांकरदा, लंदन, ऑस्ट्रेलिया, मुंबई सब जगह बहनों का ऐसा समाज है।* ***काकाजी जब समाधि में गए, तो महाराज ने आदेश दिया कि बहनों का काम शुरु करो।*** *फिर उन्होंने* ***बापा*** *से पूछा तो वे बोले—**उसमें क्या हरज़ है और... निर्विघ्न काम हुआ।** बहनों की सेवायें मूक होती हैं, वे हमारी अन्नपूर्णा माँ हैं... तो, सारा अक्षरधाम का कुटुंब है। खूब धन्यवाद बापू को कि भरतभाई, वशीभाई, अरुणभाई, योगिनीबेन जैसे रत्न हमें दिए। उनके कहने पर ये सब सभा में आते थे। भरतभाई-वशीभाई पूर्व के कोई भाई-भाई या साथीदार होंगे। काकाजी ने* ***वशीभाई*** *को ऐसी महापूजा करनी सिखाई कि वे* ***जब महापूजा करते हैं, तो महाराज प्रगट हो जाते हैं...*** *आज भी* ***काकाजी*** *गए नहीं हैं, वे साहेब, गुरुजी, बापुस्वामी, बहनों, प्रवीण लाड़, किशोर मास्टर्स, संजय विहारिया और* ***आप सब में प्रगट हैं।*** *कितने सारे काकाजी का दर्शन हो रहा है। कृष्ण ने अर्जुन से कहा था—'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्...' अर्थात्—हे सव्यसाची (अर्जुन)! तुम केवल निमित्त (साधन) बनो।*

यह बनने की सबसे अच्छी technique यह है कि ***बड़े पुरुष को हमेशा 'हाँ' बोलो।*** *जयु बहन ने जैसे सिर्फ़ 'जी काकाजी' किया, वैसे हम भी 'जी भरतभाई'-'जी वशीभाई' कहते हो जाएँ...*

प.पू. बापुस्वामीजी

...महाराज केवल कृपा साध्य सर्वोपरि अवतारों के अवतारी हैं। इस ब्रह्मांड में पधार कर उन्होंने संकल्प किया कि मुमुक्षुओं का कल्याण करना है। *स्वामिनारायण मंत्र पाँच बार जो बोलेगा, उसका भी कल्याण करना है और पूरे ब्रह्मांड को सत्संग करवाना है। जो हमारे संतों, भक्तों का दर्शन करे और उनके घर का खाना खाए, पानी पिये उन सबका कल्याण करना है। उसी संकल्प से हम सब यहाँ इकट्ठे हुए हैं।* ***उस संकल्प के वाहक बापा थे। बापा ने वही संकल्प दोहराया कि मुझे इक्यावन पढ़े-लिखे संत बनाने हैं। उस संकल्प को साकार करने काकाजी, पप्पाजी और बा ने अपना सर्वस्व समर्पण किया और ख़ुद की आहुति दी।*** *बापा ताड़देव को त्रिवेणी संगम*

कहते थे। उसमें सब इक्यावन योगेश्वरों ने स्नान किया है।

पप्पाजी ने आशीष लिखे हैं कि अपने सत्संग में संबंध से कल्याण है और संबंध वालों की माहात्म्ययुक्त सेवा करने से महाराज राज़ी होते हैं। *महाराज ने भी कहा है कि हम भक्त के भक्त हैं और भक्तों के साथ जन्म लेकर उनकी सेवा की चाहना रखते हैं और यदि ऐसा भाव न हो, तो हमारे बड़प्पन की शोभा नहीं बढ़ेगी। इस बात को बापा ने जीवंत रखा।* ***बापा कहते थे कि मुझे आप सबको दीक्षा इसीलिए देनी है कि महाराज का संदेश विश्वव्यापी बने*** *और उनका संकल्प साकार हो।* ***आज भरतभाई और भाइयों पिछले चालीस वर्षों से संप, सुहृदभाव, एकता रखकर जीवन जी रहे हैं। काकाजी को धार कर महाराज और बापा के संकल्प को आगे बढ़ा रहे हैं। गुणातीत समाज से बापा को खूब आशाएं थीं।*** *वचनामृत और स्वामी की बातों के पन्ने-पन्ने पर लिखा है कि भक्तों का माहात्म्य जान कर, उनमें दिव्यभाव और निर्दोषबुद्धि रखकर सेवा करते रहेंगे, तो अखंड शांति और शुभ संकल्प होंगे...*

हम भी आप सब की तरह गुरुजी, साहेबजी और सब स्वरूपों के नेतृत्व में माहात्म्य युक्त सेवा करते रहें, ऐसी प्रार्थना। भरतभाई की साधुता, निर्मानीभाव, दासत्व ये सब गुणों को हम अपनी नज़र के समक्ष रखें। *वशीभाई और अन्य साधक भाइयों की भरतभाई के प्रति जो दासत्व भक्ति हैं, उससे भी हम सीखें। महाराज ने कहा है कि जहाँ देहभाव और पंचविषय का खंडन होता हो तथा भगवान के भक्तों का गुणगान होता हो, वहीं अक्षरधाम है। आज ऐसी इस सभा में हम बैठे हैं...*

प.पू. निर्मलस्वामीजी

आज अक्षरधाम की सभा में अनादि मुक्त बैठे हैं। जो यहाँ बैठे हैं वे भी मुक्त हैं और जो सभा में नहीं आए, वे भी मुक्त हैं। इस सभा में ***कई वक्ताओं ने काफ़ी (आध्यात्मिक भोजन) परोसा है, उतना ही हम खाकर अगर पचा लें, तो भी बहुत है।***

यूँ दो वाक्यों में ही प.पू. निर्मलस्वामीजी के द्वारा उत्सव का सार प्राप्त करके आशीर्दान का कार्यक्रम यहाँ समाप्त हुआ और फिर **हार, स्मृति भेंट** तथा **केक** अर्पण से समारोह का समापन हुआ। महाप्रसाद लेकर सबने प्रस्थान किया। प.पू. दीदी दो बहनों के साथ पू. ओ.पी. अग्रवालजी के घर रात को ठहरने गईं। अन्य सभी पू. अनिलभाई माणेक के घर गए।

1 फरवरी की सुबह नाश्ता करने के बाद, प.पू. दीदी **पू. विश्वास पंडयाजी–पू. प्राची दीदी** के घर गए। धुन करने के बाद प.पू. दीदी ने उनकी बेटी **पू. कियाना** को प.पू. गुरुजी जैसे प्रभुधारक संत का माहात्म्य समझाया और फिर airport के लिए रवाना हुए। रात 9:00 बजे तक दिल्ली मंदिर पहुँच गए।

3 फरवरी 2026 पाटोत्सव निमित्त पूजन विधि...

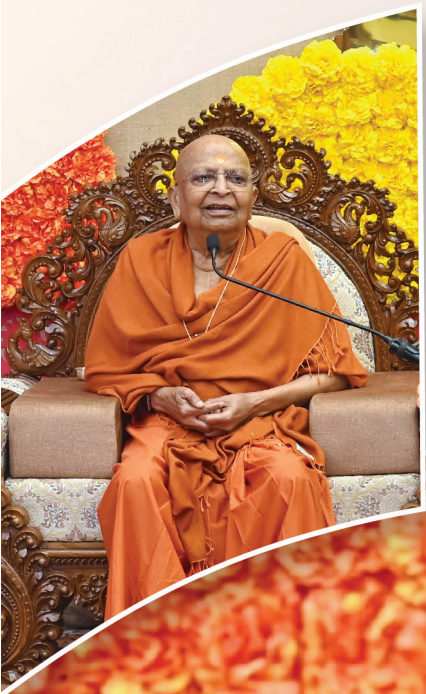

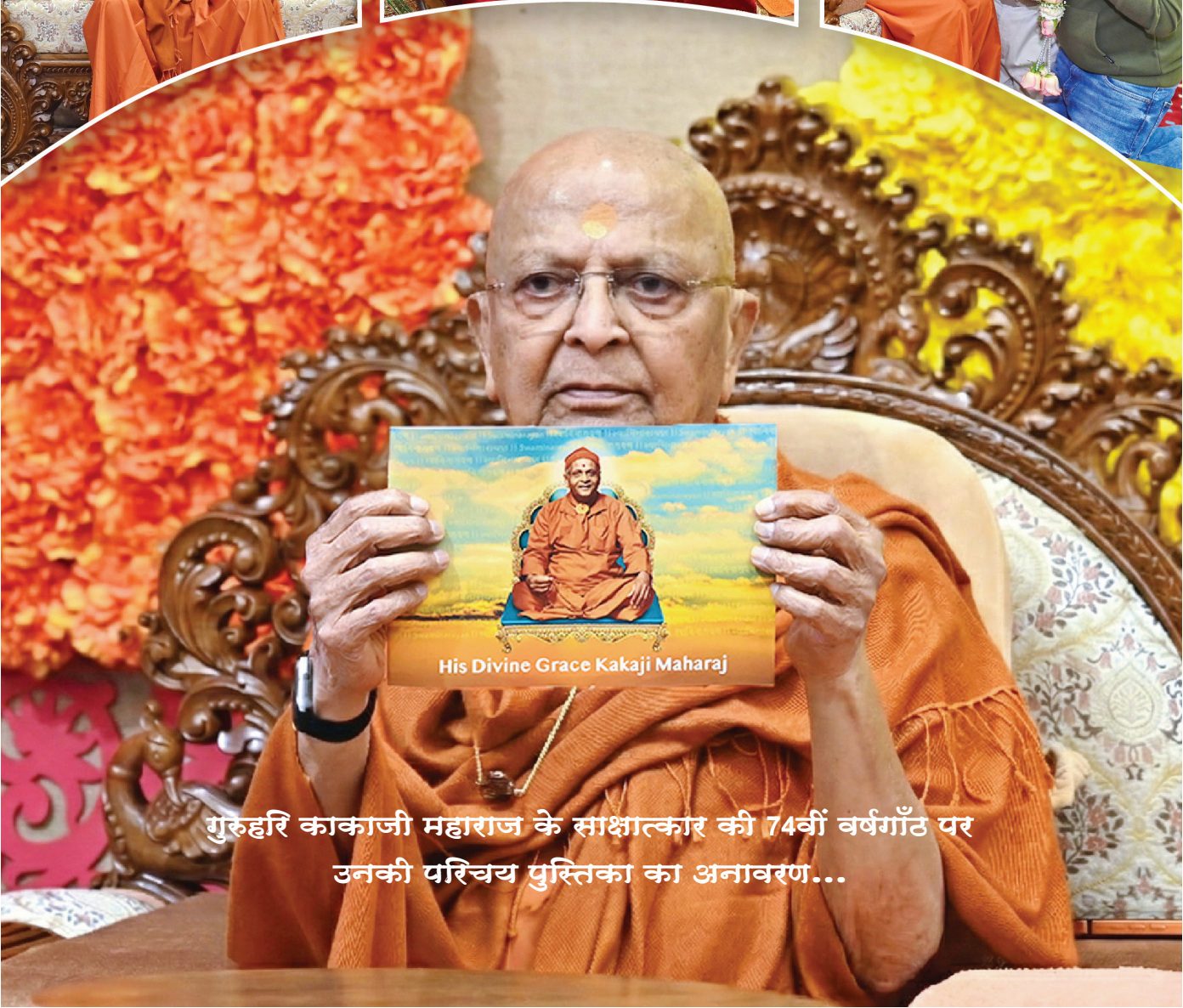

गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की 74वीं वर्षगाँठ पर
उनकी परिचय पुस्तिका का अनावरण...

एक दिन के अंतराल के बाद ही, **3 फरवरी 2026-गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की 74वीं वर्षगाँठ** एवं **मंदिर के पाटोत्सव** के उपलक्ष्य में **सुबह 9:30 बजे महापूजा** का आयोजन था। **प.पू. गुरुजी** की निश्रा में महापूजा के दौरान मंदिर के सभी संतों ने पाटोत्सव की विधि संपन्न की। **पू. आशिष शाह** और **पू. हृदय वर्मा** ने सबकी ओर से **गुरुहरि काकाजी स्वरूप प.पू. गुरुजी** को हार अर्पण करके आशीर्वाद प्राप्त किया। महापूजा पूर्ण होने के बाद गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार की स्मृति करते हुए गुजराती भजन—**'साक्षात्कारे सहजानंदने पामी आव्या...'** तथा **'मारा देहभावने भुलाव...' पू. राकेशभाई, पू. ऋषभ नरूला, सेवक पू. विश्वास, सेवक नक्षत्र** ने प्रस्तुत किए। तत्पश्चात् ध्वनि मुद्रण के माध्यम से **गुरुहरि काकाजी महाराज** की **परावाणी** का लाभ लेने के बाद **प.पू. गुरुजी** से निम्न आशीर्वाद प्राप्त किया—

आज तीन फरवरी काकाजी का साक्षात्कार दिन! ***जोगी बापा ने काकाजी को जो साक्षात्कार कराया, वो साक्षात्कार काकाजी के लिए नहीं था, बल्कि हम लोगों को काकाजी की पहचान देने के लिए था कि भई, मेरा जो उत्तराधिकारी है; वो ये है।*** *यूँ हमें काकाजी का दर्शन कराया। तो, सबसे पहले तो योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी को शत-शत नमस्कार, प्रणाम कि हमारे लिए उन्होंने ख़ुद ज़हर पीकर टोने सहन किए। आप लोग जो नए आए हो, उन्हें ख्याल नहीं है कि काकाजी की चढ़ती प्रतिष्ठा देख कर, उनके प्रति ग़लत सोचने वाले उस समय भी कई थे। लेकिन उस रास्ते न जाकर, हम अपना काम काकाजी से करा लें।* ***हम जितने विनम्र-सरल रहेंगे, उतना काकाजी हमारा सब कुछ सुमेल करा देंगे और भीतर में हमें प्रभु का दर्शन होगा।*** *ऐसा सभी को हो, यही आज के दिन प्रार्थना।*

आशीर्वाद के पश्चात् पाटोत्सव निमित्त थाल गाकर श्री ठाकुरजी को अन्नकूट अर्पण किया और संतों ने आरती की।

गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन को **गुरुहरि पप्पाजी महाराज** ने **'विजय दिन'** कह कर नवाज़ा था और सभी स्वरूप इसे **गुणातीत समाज का स्थापना दिन** भी मानते हैं। गुरुहरि काकाजी महाराज ने अपने भक्तों के प्रेम के वश low profile जीवन जिया, हमजोली बन कर आनंदोब्रह्म करते हुए सहजता से सबको प्रभु प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर किया। सो, उनका वास्तविक स्वरूप पहचान नहीं पाए कि वे कैसी दिव्य अक्षरधाम की विभूति थे! उनसे

प्राप्त अनुभवों को हमने महसूस तो किया, लेकिन शब्दों में व्यक्त करना तो सूर्य को दीपक दिखाने के समान कहा जाए। हमें सुखी करने के लिए उन्होंने जो अथक प्रयास किया, उसे यत्किंचित् नमन करने की भावना से **प.पू. दीदी** ने मुक्तों को प्रेरित करके, अंग्रेज़ी व हिन्दी भाषा में गुरुहरि काकाजी महाराज की परिचय पुस्तिका तैयार कराई।

प.पू. गुरुजी कहते हैं– ***धरती पर काकाजी महाराज का प्राकट्य होना, हम पर प्रभु की विशेष कृपा है...***

सो, इस पुस्तिका का नाम **'HIS DIVINE GRACE KAKAJI MAHARAJ'** रखा गया। **प.पू. गुरुजी** ने अपने करकमलों से इसका अनावरण करके इस विशिष्ट सभा का समापन किया। श्री ठाकुरजी को अर्पित किए अन्नकूट का महाप्रसाद लेकर सभी धन्य हुए।

जैसे प.पू. गुरुजी के निरामय स्वास्थ्य के लिए प्रति दिन अंतर से प्रार्थना-धुन करना भक्ति है, वैसे ही उनका follow-up check-up कराना भी भक्ति है। इसलिए प.पू. गुरुजी की सेवा में ओतप्रोत संत-सेवक, समय-समय पर उनकी नियमित जाँच कराने उन्हें संबंधित डॉक्टर्स के पास ले जाते हैं। पिछले वर्ष 26 सिंतबर 2025 को प.पू. गुरुजी को जब brain stroke आया, तब से दिल्ली के हमारे परिजन **पू. डॉक्टर आर.पी. सिंहजी** (ophthalmologist) निरंतर प.पू. गुरुजी की आँखों की ख़ास देखरेख कर रहे हैं। साथ ही साथ, अक्षरनिवासी **श्री काशीरामभाई राणा साहेब** के संबंध से सालों पहले दिल्ली मंदिर से जुड़े अमदावाद के हमारे आत्मीय **पू. डॉक्टर परिमल देसाई** (ophthalmologist) भी प.पू. गुरुजी की आँखों की देखभाल करते हुए संपर्क में रहते हैं।

11 फरवरी को प.पू. गुरुजी **पू. डॉक्टर आर.पी. सिंहजी** के पास routine check up के लिए जाने वाले थे। सो, प.पू. गुरुजी ने सेवकों से कहा कि इस बार **पू. डॉक्टर परिमलभाई देसाई** को भी बुलाया जाए। **पू. अभिषेक** ने पू. डॉक्टर परिमलभाई से बात की, तो वे तुरंत बोले– ***મારે મારા ગુરુજીને જોવા તો આવું જ પડે...***

अर्थात् मुझे तो मेरे गुरुजी को देखने के लिए आना ही है...

दरअसल, पहले भी डॉक्टर परिमलभाई आने का सोच रहे थे, लेकिन तबीयत खराब होने के कारण नहीं आ पाए। लेकिन, उनका कहा यह वाक्य एहसास कराता है कि प.पू. गुरुजी ने उनके दिल में कैसा स्थान लिया होगा! **पू. डॉक्टर परिमलभाई 11 फरवरी** की सुबह की

Flight से दिल्ली पहुँचे। पू. समीरभाई दवे उन्हें लेने Airport गए थे, सो उनके साथ वे सीधा पू. डॉक्टर आर.पी. सिंहजी के **eye centre 'जसोला'** पहुँचे। दोनों डॉक्टर्स ने प.पू. गुरुजी की आँखों का अच्छी तरह निरीक्षण किया। फिर दोपहर को मंदिर से आया प्रसाद लेकर, पू. डॉक्टर परिमलभाई Airport के लिए रवाना हुए और रात की Flight से अमदावाद लौट गए। **पू. डॉक्टर परिमलभाई की प.पू. गुरुजी के प्रति इस अनेरी प्रीति का दर्शन करके सबका हृदय तो गद्‌गद् हुआ ही और साथ ही सहजता से प.पू. गुरुजी के रूप में हुई 'भव्य प्राप्ति' का एहसास हुआ...**

Visitech – पू. डॉक्टर आर.पी. सिंहजी का Clinic

पू. डॉ. आर.पी. सिंहजी - पू. डॉ. परिमलभाई देसाई

13 जनवरी 2026 – 'दिव्य दीप स्तंभ' परम पूज्य आनंदी दीदी के 65 वें प्राकट्य दिन की मंगल बेला...

जैसा तुमने जीवन जिया है
काका का परिश्रम सफल कर दिया है
खुद को मिटा कर दीदी तुमने
काकाजी का नाम अमर कर दिया है।
गुरुजी की लाड़ली तूने
गुरुजी का संकल्प पूरा किया है।

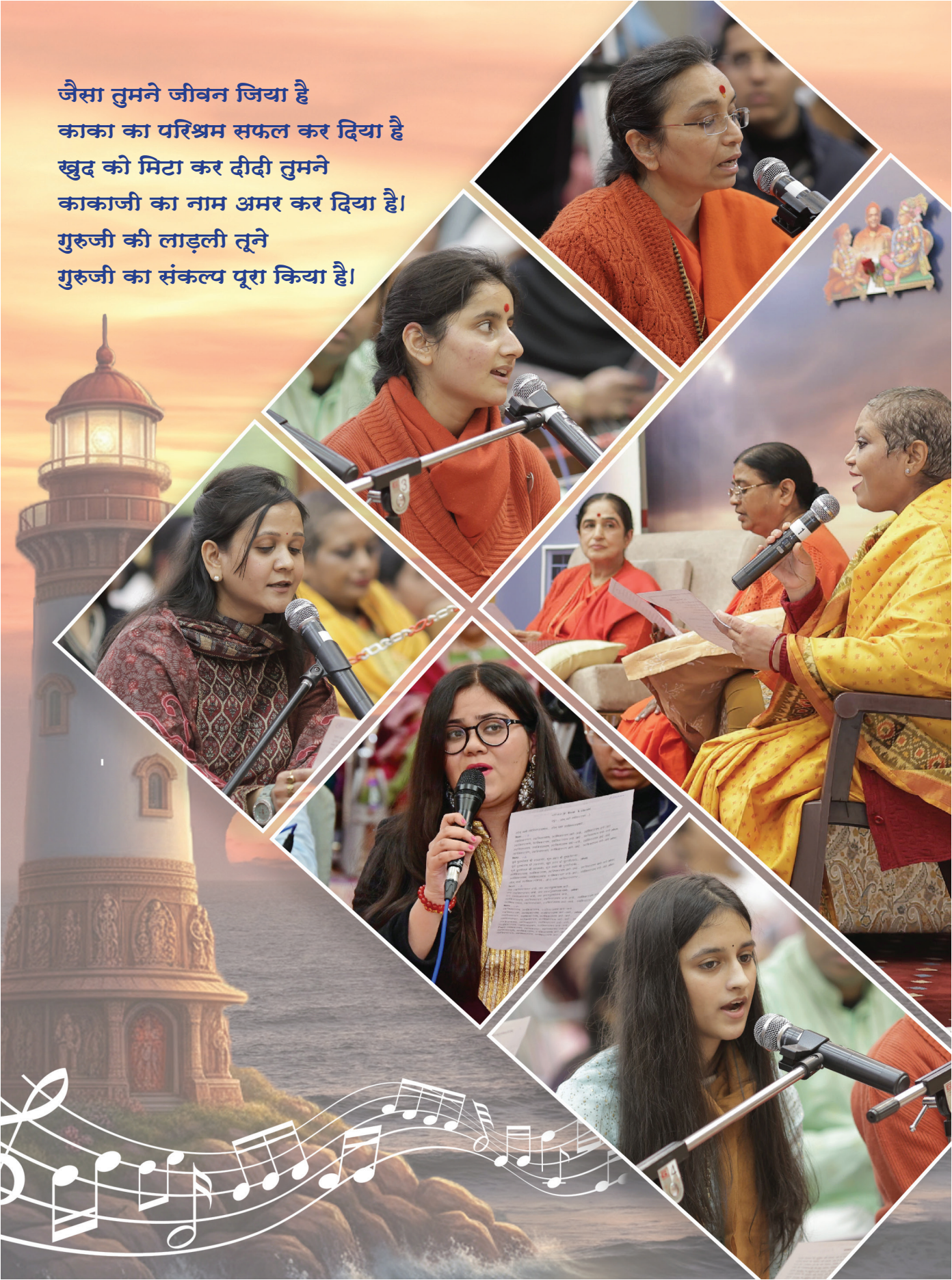

प्राकट्य पर्व निमित्त मुक्तों द्वारा हार अर्पण...

संत जो कहे वो सच्चा, संत जो करे वो अच्छा, संत में भरोसा रखना है
संत को ही आगे रखना, संत को ही राज़ी करना, संत से ही नाता रखना है...

काकाजी को राज़ी करना, गुरुजी की मरज़ी में मिटना
ये ही तेरी ज़िंदगानी
दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी...

दिव्य दीप स्तंभ - परम पूज्य आनंदी दीदी का 65 वाँ प्राकट्य पर्व...

भगवान स्वामिनारायण ने कुटुंबभाव के आधार पर संप्रदाय की स्थापना की और भक्तों के साथ ऐसे हमजोली बन कर रहे कि किसी को एहसास ही नहीं हुआ कि वे पुरुषोत्तम नारायण-सर्वावतारी हैं। इसी प्रकार, उनके अखंड धारक **मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामीजी ने अपनी वाणी-वर्तन से साधुता का सही अर्थ बताया कि संबंध में आने वाले जीव की कक्षा के अनुसार स्वयं को ढाल कर, केवल प्रभु से जो जोड़े वही सच्चा संत**! हम सब खूब भाग्यशाली हैं कि गुरु गुणातीत की परंपरा की दिव्य विभूतियों ने हमें ग्रहण किया। ऐसे भव्य स्वरूप **गुरुहरि काकाजी महाराज** एवं **प.पू. गुरुजी** की अनन्य भक्ति करके, मुक्तों का संबंध उनसे दृढ़ कराने के लिए निरंतर तत्पर **प.पू. आनंदी दीदी** का **65 वां** प्रागट्य पर्व **12 जनवरी 2026** को मनाना तय हुआ। **प.पू. दिनकर अंकल** तो इस निमित्त सबको आशीर्वाद देने के लिए **पू. किशोरभाई मास्टर्स, पू. संदीपदासजी, प.पू. माधुरी बहन, पू. जयश्री बहन** एवं **पू. एंजी बहन** के साथ **11 जनवरी** की रात को दिल्ली मंदिर पधारे।

अगले दिन यानी **12 जनवरी** शाम की 'आरती' करके **प.पू. दीदी** के प्राकट्य पर्व का शुभारंभ हुआ। **गुलाबी पोशाक** में श्री ठाकुरजी की मूर्ति के बहुत ही सुंदर दर्शन हो रहे थे। एक ओर **प.पू. दिनकर अंकल** के आसन के पीछे माला फेरते हुए गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति अंकित की थी। तो दूसरी ओर **प.पू. दीदी एवं प.पू. माधुरी दीदी** के आसन की पृष्ठभूमि पर light house की आकृति लगाई थी, जिसमें से निकलती हुई रोशनी में आध्यात्मिक दीप स्तंभ का महत्त्व लिखा था—

भवसागर में फंसे जीव को, प्रभु की राह दिखाए,
ये ऐसा दीप स्तंभ है, मेरी आनंदी माँ हैं...

सभा के आरंभ में 5 से 8 वर्ष की आयु की **पू. वाणी शर्मा, पू. सौम्या पुरी, पू. शिवन्या अरोड़ा** और **पू. भक्ति जानी** ने भावपूर्वक **'दीदी प्यारी, हमारी दीदी प्यारी...'** भजन पर नृत्य प्रस्तुत किया। बच्चों का यूं भाव व्यक्त करना एहसास कराता है कि प.पू. दीदी ने आबाल, युवा, वृद्ध सबके दिल में कैसा स्थान लिया है! हर एक के जीवन में **प.पू. दीदी** ने कहीं ना कहीं अलग-अलग प्रकार से खूब स्पर्श किया है। किसी की माँ, किसी की बहन, तो किसी की दोस्त बन कर

वे सभी के जीवन को प्यार, अपनेपन और उमंग से भर देती हैं। प.पू. दीदी के प्रति मातृवत्सल प्रेम के कारण ही इन चारों बच्चियों ने पिछले 10 दिन से लगातार practice की। इसके बाद **पू. बंसरी दीदी**, **पू. बाती दीदी**, **पू. कश्यपी अवस्थी**, **पू. नेहा अग्रवाल** और **पू. सिमरन शर्मा** ने श्रीजी महाराज एवं गुणातीत स्वरूपों का आवाहन करते हुए—**'स्वामिनारायण, स्वामिनारायण जपो जपो...'** धुन गाई।

प्रभु की असीम कृपा से मुमुक्षु जब अंतर्मन से सत्पुरुष से जुड़ जाते हैं, तो जगत में रहते भी हुए जब वे filmy song सुनते हैं, तो उन्हें प्रभु-संत से जोड़ कर उनकी मूर्ति में लीन हो जाते हैं। फिर वो song भी उन्हें भजन लगने लगता है। इसी भाव से **पू. सिमरन शर्मा** ने **प.पू दीदी** के प्रति समर्पित करते हुए **'तुम्हारा-मेरा मिलना, लिखा तो होगा कहीं...'** गाना और **पू. नेहा अग्रवाल** ने प.पू. दीदी का भजन—**'जैसा तुमने जीवन जिया है...'** प्रस्तुत किया।

तत्पश्चात् सभा के आरंभ में प.पू. गुरुजी से घनिष्ठता से जुड़े पानीपत के **पू. पुनीत गोयलजी** की धर्मपत्नी **पू. अंजलि गोयलजी** ने माहात्म्य गान किया—

*मंदिर से जुड़े हुए हमें लगभग 30 साल हो गए हैं... **गुरुजी और दीदी के प्रेम ने ही हमें बांधा हुआ है, हमारा कोई प्रयास नहीं है...** गुरुजी और दीदी तो मूर्ति लूटने का कोई मौका चूकते ही नहीं हैं।*

दीदी की बहुत-सी qualities हैं, जो सबको ही touch करती हैं।

***सबसे पहली विशेषता**—उनका विनम्र स्वभाव है। ऐसा नहीं है कि उन्हें सामने वाले की intention-nature का पता नहीं होता, फिर भी उसके साथ विनम्रता से वर्तती हैं।*

***दूसरी विशेषता**—सारे सत्संग समाज-centres में सब सत्पुरुष दीदी को बहुत प्यार करते हैं...*

'गुरुजी की 'हाँ में हाँ' और गुरुजी की 'न में न'—यह तो दीदी की सबसे बड़ी quality है...

*गुरुजी ने एक बार कहा था कि राधा ने कृष्ण को शाश्वत् कर लिया था, तो उसे कभी लगा ही नहीं कि कृष्ण चले गए हैं। तो वे कह रहे हैं कि उस पल को शाश्वत् कर लोगे, तो वो व्यक्ति हमेशा तुम्हारे साथ रहेगा... **एक ही प्रार्थना है कि हम सब एक-दूसरे के पूरक बनें, एक-दूसरे के साथ मिल कर रहें। तभी हम स्वरूपों की 'हाश' पा सकेंगे और उन्हें सहाय हो सकेंगे।***

पू. अंजलि भाभी के वक्तव्य से सबको एहसास हुआ कि प.पू. दीदी ने खुद को मिटा कर, सबके साथ ओतप्रोत होकर किस प्रकार भक्तों के दिल में स्थान लिया है। तदोपरांत जिनके हृदय

में विराजमान भगवान स्वामिनारायण, गुरुहरि काकाजी महाराज नित्य भोजन ग्रहण करते हैं, ऐसे प.पू. गुरुजी के लिए रसोई बनाने की सेवा करती अक्षरज्योति की साधक **पू. कंकु दीदी** ने प्रार्थना के पुष्प अर्पण किए–

...I am so blessed कि गुरुजी और दीदी मेरी life में आए and my life got totally changed... दीदी ने समझाया कि गुरुजी कोई मामूली संत नहीं हैं, वे गुणातीत परंपरा के साधु हैं और प्रभुधारक विभूति हैं...

दीदी मेरे लिए माँ और गुरु दोनों ही हैं। *माँ की तरह उनका care करना, मुझे प्यार से गले लगाना और पूछना–बेटा तू कैसी है? साथ ही प्यार से मुझे 'कंकुड़ी' कह कर बुलाना मुझे बहुत अच्छा लगता है।* ***इनके Gesture feel कराते हैं कि इनके जैसा निस्वार्थ प्रेम हमें और कोई नहीं कर सकता... दीदी के जीवन से यह प्रेरणा मिली है कि हमारी नज़र सिर्फ़ सत्पुरुष को राज़ी करने के लिए ही होनी चाहिए...***

मुक्तों के उद्‌बोधन के बाद **पू. बंसरी दीदी** ने उत्सव की theme का निम्न भावार्थ बताया– *आज की Decoration में हमें एक Light house दिख रहा है। जिसे हिन्दी में दीपस्तंभ, दीपघर या प्रकाशस्तंभ कहते हैं। सभी को मालूम ही होगा कि Light house एक ऊँचा स्तंभ या इमारत होती है, जो समुद्र तट पर या नदियों के किनारे बनी होती है। रात को इसमें से इतना शक्तिशाली प्रकाश निकलता है, ताकि जहाजों-नौकाओं को रास्ता दिखा कर उन्हें चट्टानों या खतरनाक जगहों से टकराने से बचाया जा सके। दूसरी बात–दूर से ही इसकी रोशनी देख कर जहाजों या नावों को ख्याल पड़ जाता है कि धरती का पड़ाव निकट है।*

इसी प्रकार, हम जो भगवान स्वामिनारायण के आश्रित हैं, उन सबको श्रीजी महाराज अपने गुणातीत संतों द्वारा अनुभव-अनुभूति कराते हैं कि वे उनमें अखंड प्रगट हैं तथा उनमें रह कर एक आध्यात्मिक दीप स्तंभ-Light house की भाँति मार्गदर्शन-आशीर्वाद देकर, वे हमें व्यावहारिक या आत्मिक परेशानियों और माया के तिमिर से उबारते हैं। साथ ही साथ, प्रभु प्राप्ति के मार्ग पर चलते पथिकों को कठोर चट्टान जैसे प्रकृति-स्वभावों से बचने हेतु गुणातीत ज्ञान देकर सरल रास्ता भी बताते हैं।

...करीब तीस साल पहले प्रबोधिनी एकादशी के दिन प.पू. गुरुजी ने आशीर्वाद रूप कहा था–

देखो, ये आनंदी मंदिर में फोन करने आई थी, यानी ग्राहक बन कर आई थी
और... आज भागीदार बन गई है!

*सच, **आद्यशक्ति स्वरूपा प.पू. आनंदी दीदी के समर्पण, गुरुभक्ति और पराभक्ति से अतिशय राज़ी होकर, सूर्य समान गुरुहरि काकाजी महाराज और प.पू. गुरुजी ने उन्हें अपना भागीदार बना कर, हमें ऐसा आध्यात्मिक दीप स्तंभ प्रदान किया है, जो अपने संपर्क में आते अनेक मुमुक्षुओं का संबंध गुरुहरि काकाजी, प.पू. गुरुजी व प्रगट स्वरूपों से दृढ़ करा कर न केवल गुणातीत ज्ञान बाँट रहा है, बल्कि भवसागर को तरने का मार्ग दिखा रहा है।***

आज उनके 65 वें प्राकट्य पर्व पर श्रीजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में अंतर से प्रार्थना है कि हम अपने मन की दिशा में अपनी जीवन नैया न चलाएँ, बल्कि प्रभु से प्रेरित होकर प.पू. दीदी जैसे संत हमें जो भी संकेत-सूचन देते हैं, उसी दिशा में मन-बुद्धि लगाए बिना चल कर जीवन धन्य करें और उन्हीं की तरह प्रभु को आत्मसात् कर लें...

प्राकट्य पर्व पर सभी की ओर से प्रार्थना करने के पश्चात् **प.पू. गुरुजी** को नमन करते हुए **पू. शिल्पी माथुरजी, पू. बंसरी दीदी, पू. नेहा अग्रवालजी, पू. विधि जानी** ने **'सुनो काका के मुकुंद की वार्ता, जो है माया के बंधन से उबारता...'** भजन प्रस्तुत किया।

आज के दिन सभी **प.पू. दीदी** के श्रीमुख से स्वरूपों का माहात्म्य और सत्पुरुषों से संबंध दृढ़ करने की करामात जानने के लिए आतुर होते हैं। सो, भजन के बाद प.पू. दीदी ने गुणातीत स्वरूपों के श्रीचरणों में निम्न आशीष याचना की–

...दिनकर दादा! आज ख़ास पहली प्रार्थना यह करनी है कि समय तो रेत की तरह हाथ में से निकलता चला गया, पर अब गुरुजी की तत्त्व से पहचान हो जाए...

★ ***काकाजी और गुरुजी अगर चाहते तो लाखों की भीड़ को सत्संग करा सकते थे, पर इतनी बड़ी दुनिया में उन्होंने हमें चुना।*** *1984 में काकाजी ऐसा बोले भी थे कि मैं चाहूं तो दर्शन के लिए मेरठ तक यहां से लाइन लग जाए, लेकिन फिर मैं आप लोगों के हिस्से नहीं आऊंगा... आज गुरुजी हमारे लिए इतने सस्ते बने हैं कि मंदिर में आराम से मिल जाते हैं... हमारे लिए वे हमेशा **available** रहते हैं।*

★ *एक बार महाराज विचरण से वापिस आकर बैठे थे। जैसे ही संत महाराज के चरण स्पर्श करने के लिए आगे झुके कि उन्होंने एकदम अपने चरण पीछे खींच लिए। संत विचार में पड़ गए कि महाराज ऐसा क्यों कर रहे हैं? फिर महाराज ने पूछा– तुमने ऐसा क्या साधन किया है कि मैं राज़ी होकर तुम्हें अपने चरण छूने दूँ? फिर एक संत ने अत्यंत विनम्रभाव से*

कहा—महाराज, आपकी बात सौ प्रतिशत सच है। आपको पाने के लिए हमने कोई साधन नहीं किया। आप कृपा करके हमारे जीवन में आ गए। लेकिन ***हम जैसे भी हैं, आपके हैं। उनकी यह विनम्रता और समर्पण देखकर महाराज ने अपने चरण आगे कर दिए। हमें भी यही सोचना चाहिए कि हमने कोई साधन नहीं किया है, यह केवल उनकी कृपा है।***

★ *एक बार काकाजी के पास सत्संगी* ***प्रतिमा बहन*** *आईं। वे किसी बात से परेशान होंगी, तो उन्होंने काकाजी से शिकायत भरे लहज़े में कहा— आपने मेरा क्या काम किया? हम कई बार जब मन से परेशान होते हैं, तो भगवान को ऐसे ही उलाहना देते हैं। पर,* ***काकाजी*** *उन्हें अपना मानते थे, तो उनसे स्पष्ट कहा—*

✦ ***तुम लोगों की बिना किसी लायकात के मैंने तुम्हें 'ब्रह्मविद्या के कॉलेज' में admission दे दिया।***

✦ ***इस कॉलेज का नियम है कि 'किसी का दोष नहीं देखना' और तुम लोग वही करते रहते हो। फिर भी मैं तुम्हें Rusticate नहीं करता।***

✦ ***तुम जो दूसरों के दोष देखते हो, उसका पाप तुम्हें न लगे, इसके लिए मैं प्रायश्चित रूप प्रार्थना भी करता हूँ।***

तो, ये महापुरुष हमारे लिए कितने सुलभ बने हैं। लेकिन, हम उन्हें अपनी मायिक आँखों से देखते हैं...

★ *हमारे यहाँ* ***दीक्षा दीदी*** *हैं, जो गुरुजी के लिए भोजन बनाती है। 1989 में वो 12वीं कक्षा की परीक्षा देने के बाद अक्षरज्योति सेवा करने आई। एक दिन दोपहर को वो गुरुजी के लिए काढ़ा लेकर मंदिर गई। गुरुजी ने सेवक द्वारा दीक्षा से पुछवाया कि उन्हें स्कूटर चलाना आता है? दीक्षा ने कहलवाया—नहीं आता। लेकिन, गुरुजी ने चलाने के लिए कहा और प्रभाकरभाई को पीछे बैठने के लिए कहा। दीक्षा स्कूटर पर बैठी और 10 की speed पर स्कूटर चलाया होगा कि गिर गई और उसे vomit हो गई। तो, गंगाराम अस्पताल ले गए। वहाँ डॉ. वी.एस. मदान ने brain की surgery करने को कहा। तब* ***गुरुजी ने खुद form पर sign करे कि मैं जिम्मेदारी लेता हूँ।*** *Surgery के बाद होश आने पर वो बस '****गुरुजी, गुरुजी****' बोलती रही। यह सुन कर डॉक्टर हैरान थे। फिर* ***उनकी माँ पुष्पा आंटी ने बताया कि सत्संग में आने से पहले उसके हाथ में कोई लकीरें नहीं थीं। Surgery के बाद लकीरें बननी शुरु हुईं। गुरुजी ने उसे नया जीवन और भगवान भजने का मार्ग दिया। हमें कितने समर्थ गुरु मिले हैं और वे हमारे साथ कितनी आत्मीयता से रहते हैं, यह उसका example है।***

★ *पिछले साल हम 70-80 मुक्त अनिल मासा के घर मुंबई गए थे, फिर वहाँ से इगतपुरी जाना था। मुंबई जब वापिस आए तो बंसरी दीदी वगैरह जिस फ्लैट में रुकी थीं, उसकी चाबी नहीं मिल रही थी। रात के 1:30 बज गए और चाबी नहीं मिली। गुरुजी बोले—मिलन, नीचे गाड़ी के dashboard के खांचे में चाबी पड़ी है। वाक़ई चाबी वहीं मिली। मिलन की गाड़ी में गुरुजी एक बार भी नहीं बैठे थे, फिर भी उन्हें पता था। हालाँकि यह चमत्कार है, पर वे इसे बड़प्पन नहीं मानते। उनकी चाहना यही रहती है कि हमारा जीवन इतना सुंदर आसन बन जाए कि अंदर भगवान को विराजमान होने का मन हो।* ***संत की हमेशा यही चाहना रहती है कि कब बिलकुल साफ़–सुथरा करके, जन्म–मरण के रोग से मुक्त करा के तुम्हें भगवान के चरणों में वे बिठा दें।***

★ *साहेब दादा, हंसा दीदी आदि गुरुजी को पहले से जानते हैं। तो, 13 दिसंबर 2025 को दिल्ली से कुछ मुक्त हंसा दीदी से गुरुजी के बारे में कुछ पुराने प्रसंग पूछने गए थे। आख़िर में* ***हंसा दीदी ने कहा—गुरुजी से कहना कि अब वे अपनी तबीयत अच्छी रखें, हमें उनकी बहुत ज़रूरत है। बंसरी दीदी ने सहजभाव से प्रार्थना की—दीदी, गुरुजी की तो हम सबको ज़रूरत है, लेकिन हमें आपकी भी बहुत ज़रूरत है।*** *आप भी हमारे सिरछत्र हैं, इसलिए आप भी अपनी तबीयत अच्छी रखना। अभी बंसरी दीदी की प्रार्थना चल ही रही थी कि* ***हंसा दीदी ने तुरंत गुजराती में कहा—तमे लोको जल्दी-जल्दी प्राप्ति करी लो, एनी अमने खूब ज़रूर छे (तुम लोग जल्दी से जल्दी प्राप्ति कर लो, इसकी हमें बहुत ज़रूरत है)। उनका यह अर्थ था कि तुम्हें जो ये प्रगट स्वरूप मिले हैं, उनके स्वरूप को जल्दी से पहचान लो।*** *बड़े पुरुष हमसे यही चाहते हैं कि हम जल्दी से जल्दी उन्हें पहचान लें... साधु को नाराज़ होने का तो हक़ है ही नहीं। पर, दुःख इस बात का होता है कि हमारे negative विचारों के कारण एक रुपये की सेवा का फल केवल 10 पैसे ही मिलता है, जबकि साधु ऐसा सोचते हैं कि इन्हें मेरा संबंध हुआ है, तो मुझसे जो लेना है वो ले लें। लेकिन हम दूसरी चीज़ों में उलझे रहते हैं।*

★ ***गुरुजी का जीवन हमें व्यवहारिक और आध्यात्मिक रूप से बहुत कुछ सिखाता है...*** *1961 में 23 साल की उम्र में उन्होंने भगवान के लिए भगवा वस्त्र धारण कर साधु की दीक्षा ली। जिस गुरु योगीजी महाराज के लिए उन्होंने जीवन समर्पित किया था, 1966 में उस संस्था से अलग हो गए। फिर 1967-68 में काकाजी महाराज ने उनसे कहा कि हमें दिल्ली में*

योगीजी महाराज का संकल्प पूरा करना है, आप दिल्ली जाओ। तो, बड़े समूह से अलग होकर दिल्ली आए। यहां भाषा-संस्कृति नई थी और स्वामिनारायण संप्रदाय से कोई परिचित नहीं था। काकाजी से दूर रह कर दिल्ली में पहले भारत साधु समाज, IPSR में रहे। फिर वहां से अशोक विहार में A-54, A-116 और A-103 नंबर की कोठियों में रह कर आधे-अधूरे मंदिर में shift हुए। ***भगवान का साक्षात् स्वरूप होते हुए भी गुरुजी ने इतना संघर्ष किया। लेकिन, कभी उनके मुख से यह नहीं सुना कि काकाजी, मैंने आपको पूरा जीवन दिया और आपने मुझे यह क्या दिया? जबकि हम थोड़ी–सी तकलीफ़ आने पर कितने बेचैन होते हैं।***

★ *हमें सत्संग* ***समझदारी*** *से करना चाहिए। किसी हरिभक्त को हार पहनाने पर हमारे मन में नापातोली शुरु हो जाती है कि गुरुजी ने उन्हें हार क्यों पहनाया होगा? शायद गुरुजी को उनसे कोई काम होगा या कोई बड़ी भेंट लेनी होगी। इतने सालों में हमने गुरुजी को कितना समझा है?* ***हम सत्पुरुष से कुछ पाने आते हैं, लेकिन हमारा मन कहाँ दौड़ता है? हमें अपना नज़रिया बदलना होगा। साधु की हर क्रिया के पीछे हमारा श्रेय ही होता है।***

★ *दिसंबर 2024 में हम छपैया गए थे। Pacemaker लगने के कारण गुरुजी का जाना रद्द हो गया था। भक्त थोड़े उदास थे, लेकिन दिनकर दादा वहां आए थे। मैंने देखा कि दूर बैठ कर दिनकर दादा, सुहृदस्वामी और अक्षरस्वरूपस्वामी के साथ भोजन कर रहे थे।* ***दिनकर दादा ने भोजन समाप्त करने के बाद, कटोरी में जो थोड़ा–सा प्रसाद रह गया था, उसे भी उन्होंने उंगली से पोंछ कर बिलकुल साफ़ कर दिया। ये देख कर विचार आया कि दिनकर दादा कटोरी इतनी अच्छी तरह साफ़ कर रहे हैं, तो हमारे चैतन्य को कितनी अच्छी तरह साफ़ करेंगे!*** *संतों का जीवन हमें बहुत कुछ सिखाता है।*

★ *मेरी पूर्वाश्रम की छोटी बहन अंशु पटियाला से आती है।* ***2023 में 6 फरवरी को हमारी माताजी का देहांत हो गया था। अंशु को गहरा सदमा लगा था।*** *जब वो उनकी श्रद्धांजलि सभा के बाद मंदिर आई, तो उसका उतरा हुआ चेहरा देख कर गुरुजी ने सेवक से कहलवाया कि आज दीदी के साथ उसका फोटो खिंचवाओ। फिर गुरुजी ने भाभियों के साथ फोटो खिंचवाने के लिए कहलवाया। करीब डेढ़ घंटे तक फोटोग्राफी चली। इस प्रसंग से अंशु माताजी के दुःख- Trauma से बाहर निकल गई और बिलकुल fresh हो गई।* ***ऊपर से***

देखने पर हमें ऐसा लगे कि ये सब क्यों करवा रहे हैं? पर, गुरुजी का यह gesture केवल उसके दुःख को दूर करने के लिए था।

★ ***...बातों को मन में रख कर हम सड़ते न रहें। कभी कुछ चुभ जाए, तो जिस पर हमें विश्वास हो उससे पूछ लें।*** *वर्ना कहीं ऐसा न हो जैसे कि शायद स्वामी की बात प्रकरण तीन की 35वीं में लिखा है—दूसरे तो अभागे, पर यादव तो निरंतर अभागे। क्योंकि श्री कृष्ण उनके कुल में जन्मे, फिर भी उन्हें कोई पहचान न सका। वैसे* ***कहीं भविष्य में हमारा नाम उस list में न आए कि काकाजी ने गुरुजी जैसी top गुणातीत विभूति हमें दी और हम अपने मन के बवंडरों में रह के उन्हें पहचान नहीं पाए...***

★ *पिछले साल* ***अनिल मासा-दमी मासी*** *की* ***शादी की 50वीं सालगिरह*** *थी। तब गुरुजी के पैर के अंगूठे का कुछ treatment हुआ था, फिर भी वे सुबह 8:30 बजे मुंबई से आ रहे मासा-मासी को receive करने स्टेशन पहुंच गए...* ***गुरुजी ने हर एक को आध्यात्मिक और व्यवहारिक सब तरीके से बहुत दिया है, बहुत-बहुत लाड़ लड़ाए हैं।***

★ *इगतपुरी में गुरुजी से* ***नक्षु*** *ने पूछा था— गुरुजी, हमारी spiritual progress हो रही है, वो हमें कैसे पता चले?* ***गुरुजी*** *ने एक ही sentence में बहुत अच्छा जवाब दिया—* ***कोई हमारी खूब insult करे, लेकिन तब भी हमें उसका अभाव न आए, हमें उसका चुभे नहीं और उसके अंदर हम महाराज को देख सकें, तो समझना हमारी spiritual progress हो रही है।***

हमें 'आया राम गया राम' वाला सत्संग नहीं करना है। हम एक समझदारी के साथ, सचमुच इस सत्पुरुष से और गुणातीत पुरुषों से कुछ पाना है, इस भावना से सत्संग में आएँ। वर्ना तो हम अपेक्षाएं रखते रहेंगे और छोटी-छोटी बातों पर रूठते-मनाते रहेंगे। ***समय तो रेत की तरह अपने हाथ से निकलता जा रहा है। तो, अब हम सबके वर्तन से इन गुणातीत स्वरूपों-गुरुजी को 'हाश' हो, ऐसा हम जीने लगें, ऐसी आज के दिन प्रार्थना है।***

तत्पश्चात् प.पू. दीदी के प्रागट्य पर्व निमित्त **पू. शिल्पी माथुरजी** ने **पू. राकेशभाई शाह** एवं **पू. नित्या दीदी** द्वारा रचित **नया भजन— 'गुरुवचन का मर्म बताएँ, खुद जीकर जो सिखाएँ, वो ही आनंदी माँ है...'** प्रस्तुत करके वातावरण को दिव्यता से भर दिया।

इस भजन के बाद **प.पू. माधुरी दीदी** ने मंगलकामना की–

*...हम बहुत भाग्यशाली हैं कि आज दीदी के प्रागट्य दिन पर यहाँ आना हुआ... **काकाजी** और **पप्पाजी**, सभी स्वरूपों को बहुत-बहुत धन्यवाद कि उन्होंने हमें **सोनाबा, ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा दीदी, देवी बहन, प्रेम बहन, योगिनी बहन, आनंदी दीदी** और अभी **सौजन्य बहन,** सांकरदा के **जयश्री बहन** जैसे स्वरूप भेंट में दिए हैं। जीवन में कुछ न कुछ प्रसंग तो बनते ही रहते हैं, लेकिन मार्गदर्शन देने वाले ऐसे स्वरूप हमें सहज भेंट में मिले हैं। **हम बहनों के लिए सोनाबा, ज्योति बहन, तारा बहन, हंसा दीदी और देवी बहन ने बहुत परिश्रम किया। उन्होंने जब भगवान भजने की शुरुआत की, तब उन्हें कितनी गालियाँ खानी पड़ीं।** भगवान को प्रगटाने के लिए मार्गदर्शन देने वाला तब कोई नहीं था, फिर भी खुद भजन करके भगवान को प्रकट करके वे जीवन जिए। **ऐसे ही आनंदी दीदी हैं... जिनकी रचना इतनी सुंदर है, तो उनका जीवन कितना सुंदर होगा!** जहाँ जैसी जरूरत पड़ी, उन्होंने वैसी सेवा की। **काकाजी ने जैसे दिल्ली व पंजाब वालों को गुरुजी की भेंट दी, वैसे ही श्रीजी महाराज के समय की दीदी की भी भेंट दी है।** हम बहुत भाग्यशाली हैं कि उनका जीवन हमने पहले से देखा है। **काकाजी जब लोनावला या माथेरान में शिविर रखते थे, तो आनंदी दीदी बहनों के साथ आती थीं। उनका एक ही अनुसंधान रहा कि सत्पुरुष क्या कह रहे हैं? उसमें से मुझे क्या ग्रहण करना है? मुझे क्या जीवन जीना है? आज भी वैसा ही अनुसंधान है। काकाजी, गुरुजी और सब भक्तों की महिमा ही उनकी बातों में होती है। उनके मन में यह भाव नहीं आता कि 'आज मेरा जन्मदिन है...', उनका जीवन सहज प्रभुमय है।***

*उनके जीवन का एक और पहलू हमने देखा है। शुरुआत में दिल्ली में ज़्यादा हरिभक्त नहीं थे, तब मंदिर वगैरह कुछ नहीं था। **पर, जब भी काकाजी आते थे, तब functions में आनंदी दीदी और रेणू दीदी रसोई घर में छोले, गाजर का हलवा आदि प्रसाद बनाती थीं।** उनका जीवन सहज सेवा का रहा है। खूब भाव, महिमा, उत्साह और उमंग से सेवा करती थीं कि सब भक्त खाना खाने वाले हैं। आनंदी दीदी और रेणू दीदी की जोड़ी थी...*

हमने यह भी देखा है कि आनंदी दीदी के परिवार में बहुत विरोध था। रोड पर बाल खींच कर उन्हें घर वाले ले जाते थे। उन्होंने बहुत मार खाई है-खूब सहन किया। बाद में जब घर वाले पूजा वगैरह करने लगे, तो उनकी मम्मी और बहन उन्हें देवी मानने लगे। लेकिन, उन्होंने जो सहन किया, वह कोई और नहीं कर सकता और सबसे बड़ी बात यह कि उन्होंने कभी फरियाद

नहीं की। काकाजी-गुरुजी को कभी एहसास नहीं होने दिया कि 'मैं इतना सहन करती हूँ'। उनका जीवन पहले से ही बहुत सरल और प्रेमपूर्ण रहा है।

आनंदी दीदी बहुत दयालु भी हैं। अगर किसी को ज़रूरत होती तो पैसे दे देतीं, लेकिन वापिस माँगती नहीं थीं। पहले गुरुजी का प्रागट्य दिन नहीं मनाते थे। पर, जब गुरुजी का प्रागट्य दिन मनाने का निर्णय हुआ, तो गुरुजी ने कहा होगा कि मंदिर से कोई पैसे नहीं मिलेंगे, यदि मनाना है, तो भक्तों से सेवा लेनी होगी। दीदी ने सोचा—कोई बात नहीं, हमें मनाने तो देंगे ना! तो, उन्होंने भक्तों से सेवा मांगी। सत्वगुण के कारण किसी से माँगने में उन्हें संकोच होता था, लेकिन गुरुजी ने वह संकोच भी निकाल दिया। ***दीदी ऐसे सब गुणों से परे हैं...*** *काकाजी ने भी उनके परिवार के साथ जो लेन-देन था, वह पूरा कर दिया था। आज हमें ऐसे दिव्य दर्शन होते हैं।* ***सबके लिए आनंदी दीदी—आनंदी माँ हैं...***

अभी गुजरात गए थे, तो दिनकरभाई की तबीयत ठीक नहीं थी। हमें लगा उनका दिल्ली जाना cancel होगा, लेकिन फिर भी वे यहाँ आए, यह बहुत बड़ी बात है। झोली (संक्रांति) का पर्व भी आ रहा है। ऐसे पर्व में हमें हमारे हठ, मान, ईर्ष्या की भिक्षा देनी है।

ज्योति बहन *ने एक प्रसंग बताया था कि संत झोली माँगने गए थे। एक भाई स्वामिनारायण के बहुत विरोधी थे, उन्होंने गुस्से में मैला कपड़ा संत की झोली में डाल दिया। संत उसे मंदिर ले गए और सोचा कि यह झोली में आया है, कोई बात नहीं। हम इसे अच्छी तरह धोकर सुखाएंगे और इसकी बाती बनाकर भगवान की आरती में इस्तेमाल करेंगे। तात्पर्य यह है कि हमारे ग़लत व्यवहार को भी सेवा रूप मान कर, ये संत उसे किसी तरह भगवान तक पहुँचाते हैं। ऐसे ही* ***हमारे अंदर भी कितने हठ, मान और ईर्ष्या के भाव हैं, लेकिन आनंदी दीदी कुछ भी देखे बिना हमें अपने साथ बिठाती हैं। ये स्वरूप हमारे स्वभाव या प्रकृति नहीं देखते, बल्कि हमारा भाव ग्रहण करते हैं...***

तत्पश्चात नए वर्ष व प.पू. दीदी के प्रागट्य दिन निमित्त **प.पू. दिनकर दादा** ने सब पर आशीष वर्षा की—

...जैसे योगी गीता में लिखा है कि किसी दस साल की लड़की को क्षय रोग हुआ हो, तो वो युवती होने से पूर्व मर जाएगी, ऐसे ही ***जब तक हमारी भक्ति के अंदर महिमा नहीं आएगी, तब तक वह कभी भी चली जाएगी–टूट जाएगी।*** *गुणातीत ज्योत की बहनों ने भजन में लिखा*

है—सत्संग की शुरुआत है महिमा, पूर्णाहुति भी महिमा... हम सब यहाँ आए हैं, वो कुछ न कुछ महिमा से आए हैं, लेकिन बीच में disturbance phase अमहिमा का आता है...

सत्संग में गुरुजी का 1961 में साधु होना, 1966 में संस्था से अलग होकर गुणातीत समाज में आना फिर 1967 में काकाजी के कहने पर दिल्ली आना, यह सब divine plan था... आज हमारी आनंदी दीदी गुणातीत माँ बनकर सब के साथ प्रेम करके, महिमा भर रही हैं...

जैसे जमीन में एक गेहूं का दाना डालते हैं, तो 100-200 पौधे निकल आते हैं, ऐसे ही ***स्वामिनारायण भगवान ने पृथ्वी पर आकर ब्रह्मरूप बनाने की उपज करके, ऐसे चैतन्य तैयार किए हैं। ऐसे अच्छे समय में हमें पृथ्वी पर यहाँ जन्म मिला, वो सबसे बड़ी बात है। हमारी दीदी हम सबको ब्रह्मरूप बनाने के लिए इधर आई हैं। हम सब संबंध से ब्रह्मरूप हो गए हैं।*** *जैसे ब्राह्मण का बेटा ब्राह्मण, बनिये का बेटा बनिया ही कहलाता है, वैसे ही ब्रह्मरूप का बेटा या बेटी भी ब्रह्मरूप है...* ***अब हमें ब्रह्मरूप से एक अगली कक्षा पर जाना है और वो है स्थिति से ब्रह्मरूप हो जाएँ।***

हमारा Behaviour-वर्तन, Personality ऐसी हो कि हम वही प्रकाश-Vibration डाल सकें, ताकि हमारे आस-पास का वातावरण भी ब्रह्मरूप होता जाए और फिर सारा दिल्ली, हिंदुस्तान, ब्रह्मांड ब्रह्मरूप हो जाएगा। *क्योंकि* ***200 साल पहले गुणातीनंदस्वामी ने ये आशीर्वाद दिया है कि हर एक को ब्रह्मरूप करना है, हर एक को high level पर ले जाना है। अब हमारी तैयारी जितनी होगी, उतना हमारा जल्दी होगा... इसके लिए सबको ब्रह्मरूप मान कर उसके सामने हमें झुक जाना है, दिव्यता रखनी है...***

गुरुजी और दीदी ने यहाँ जो बहनें तैयार की हैं, हर एक के अंदर सौरभ-पवित्रता दिखाई पड़ती है... अगले साल गुरुजी का 90वाँ प्राकट्योत्सव होगा, तो हम ज़रूर उसका दर्शन करने के लिए आएंगे... ***गुरुजी को हरिभक्त बहुत प्यारे हैं।*** *कोई ऐसा स्वरूप नहीं देखा है कि जिसका bedroom ना हो। पर,* ***जिसका room ही बड़ा hall हो और आस-पास सब हरिभक्त साथ में सोते हों, वो गुरुजी हैं।*** *देखा जाए मंदिर में तो arrangement कर सकते हैं। और तो और, हरिभक्तों के घर भी जाते हैं, वहाँ भी drawing room में सबके बीच में सोते* ***हैं*** *और* ***गुरुजी का यह nature योगीजी महाराज के time से है।***

योगीजी महाराज जहाँ आराम करते हों, वहाँ रात को 2:00 बजे गुरुजी जाते थे। *सेवक उन्हें वहाँ बैठ कर मन में धुन करने के लिए मना करते थे कि योगीजी महाराज को disturb होगा।*

पर, योगीजी महाराज कहते—मकंद को आने देना वो हमारा है, उसको मना मत करना। कितनी महिमा होगी?

...हमारी बंसरी दीदी ने ***गुरुजी*** *से माला मांगी थी, तो उन्होंने सेवक से भिजवाई।* ***रात को 2:00 बजे वो माला जगा कर कहती— उठो, धुन करो। माला के अंदर कितनी पावर होगी? तो, ऐसे बड़े गुणातीत स्वरूप जो हमें मिले हैं, वो हमारे लिए बड़े भाग्य की बात है...***

हम ऐसा न मानें कि हम पापी, कामी, क्रोधी, लोभी और लंपट हैं, संत अपने संबंध से ये सब उड़ा देंगे। जैसे किसी गरीब आदमी ने एक रुपये की लॉटरी टिकट ली और लॉटरी लगने पर उसे एक करोड़ मिला, तो वह फिर करोड़पति बन जाता है, ऐसे ही ***हम कैसे भी हैं पर ऐसे गुणातीत संतों के संपर्क में आए, तो हमारे सब पाप एक चुटकी में जल जाएंगे और हम ऐसे गुणातीत बन जाएंगे। लेकिन, हमें हमारी पुरानी आदतें ही हीन भावना में ले जाती हैं कि मैं तो ऐसा हूँ-वैसा हूँ। हमारे भरतभाई हर रोज़ प्रार्थना में बोलते हैं— 'आज तक का सब माफ़ हो गया है।'*** *मगर हमारे दिल में यह बात बैठती नहीं हैं और ऐसा ही मानते हैं कि दो साल पहले मैंने तो ऐसा किया था।* ***ये भी महिमा की कमी है।*** *अरे भई, माफ़ तो कर ही दिया है। तो, ऐसा हम ज़रूर मानें, यदि यूँ मानेंगे तो हमारा काम होगा... दरअसल, हम* ***श्रद्धालु नास्तिक हैं*** *और इस कमी को दूर करने के लिए ऐसे संत हमें पूरा विश्वास दिलाएंगे।*

गुरुजी का 90वाँ प्राकट्य पर्व next year मनाने वाले हैं, तो यही प्रार्थना करते हैं कि उनका 100वां प्राकट्य पर्व हम अच्छी तरह से-उनकी अच्छी तबीयत से मनाएंगे। *धन्यवाद है हमारे* ***अभिषेकभाई, विश्वासभाई*** *और* ***सब*** *सेवा करने वालों को कि गुरुजी की कितनी अच्छी सेवा करते हैं।* ***गुरुजी में डूब कर वो ब्रह्मरूप हो गए हैं और उनका हम भाव से दर्शन करेंगे, उनके हाथ से हम हाथ मिलाएंगे, तो हम भी निहाल हो जाएंगे...***

जब भी कोई problem आए तो धुन-प्रार्थना करें और problem अपने आप solution बन कर stepping stone बन जाएगा और हमारे ब्रह्मरूप बनने के मार्ग में माया भी परम सुखदाई हो जाएगी, ऐसा हो जाए वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकर अंकल के आशीर्दान के पश्चात् **सेवक निमाई** और **पेरिस** के सत्संगी **पू. भरतभाई मिस्त्री** ने सबकी ओर से उन्हें हार अर्पण करके अभिनंदन किया। **पू. पुण्य मल्होत्रा** ने **पू. किशोरभाई मास्टर्स** का हार से अभिवादन किया। **प.पू. माधुरी दीदी** को **पू. बीनाभाभी शाह** ने सभी भाभियों की ओर से हार अर्पण किया। तत्पश्चात् प्राकट्य पर्व निमित्त **प.पू. दीदी** को

मुंबई और गुजरात के हरिभक्तों की ओर से **पू. डॉली दीदी** और **पू. हंसा बहन दोशी** ने, पवई और शिकागो के मुक्तों की ओर से **प. पू. माधुरी बहन**, **पू. जयश्री दीदी** और **पू. एन्जी बहन** ने तथा पेरिस व पंजाब के मुक्तों की ओर से **पू. धर्मिष्ठा बहन मिस्त्री** और **पू. अनिता कत्यालजी** (जगरांव) ने हार अर्पण करके भाव व्यक्त किया।

दिसंबर 2025 में अक्षरज्योति की कुछ बहनें जब गुणातीत ज्योत-वल्लभ विद्यानगर, **प.पू. तारा बहन** के **95वें प्रागट्य पर्व** का दर्शन करने गई थीं। तब **प.पू. हंसा दीदी** ने **प.पू. दीदी** के लिए आशीर्वाद स्वरूप श्री ठाकुरजी की मूर्ति, चरणारविंद और आशीष पत्र भेजा था, जो **पू. स्वाति दीदी** ने प. पू. दीदी को अर्पित किया। **प.पू. हंसा दीदी** द्वारा गुजराती में लिखे आशीर्वाद का निम्न हिन्दी भावार्थ था—

दीदी आप के लिए पूजा के भगवान भेज रही हूँ। सबकी चेतना के विकास के लिए इन्हें बहुत कार्य करना है...

दिल्ली के समस्त सत्संग परिवार की ओर से प.पू. दीदी को अर्पण करने अक्षरज्योति की बहनों ने एक विशेष हार तैयार किया था। आज की theme के अनुसार इस हार में lights लगाई थीं, जो इस बात का निर्देश दे रही थीं कि **'दीदी' हम सबके लिए आध्यात्मिक 'लाइट हाउस' हैं।** प.पू. दीदी की सदैव यह भावना रहती है कि दिल्ली के मुक्तों द्वारा अर्पित किया जाने वाला हार प.पू. गुरुजी की प्रसादी का करवा कर उन्हें पहनाया जाए। सो, पेरिस के **पू. भरतभाई मिस्त्री**, **'चिदाकाश'** हॉल में विराजमान **प.पू. गुरुजी** को अर्पण करके, प्रसादी का यह हार **'कल्पवृक्ष'** हॉल में लाए। तत्पश्चात् प्रसादी का यह हार **पू. दीक्षा दीदी** एवं **पू. संगीता खन्नाजी** ने प.पू. दीदी को अर्पण किया।

हार विधि एवं स्मृति भेंट कार्यक्रम के पश्चात् **पू. काव्या पुरी**, **पू. स्माइली शर्मा**, **पू. गति वर्मा**, **पू. मोक्षदा सिंह**, **पू. दीक्षा यादव**, **पू. ग्रेसी द्विवेदी** और **पू. रोली मोन्डे** ने वर्ष 2012 में पवई के **पू. हेमंतभाई मर्चंट** द्वारा रचित प.पू. गुरुजी के भजन **'हम एक हैं, हमको एक ही है रहना...'** पर भाव नृत्य प्रस्तुत करके भक्ति अदा की।

दिल्ली की **मुख्यमंत्री श्रीमती रेखा गुप्ताजी** के भाई **श्री प्रदीपजी** उनका प्रतिनिधित्व करते हुए, उनकी ओर से शुभकामना संदेश लेकर आए थे, वह उन्होंने प.पू. दीदी को दिया। इस प्रकार उत्सव का समापन हुआ। परंतु, बाद में भी करीब आधे घंटे तक मुक्तों ने भेंट-सौगात के रूप में अपनी भावनाएँ व्यक्त कीं और फिर प्रसाद लेकर प्रस्थान किया।

भजन

(राग— मिलो न तुम तो हम घबराए...)

गुरु वचन का मर्म बताएँ, खुद जीकर जो सिखाएँ
वही आनंदी माँ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...
गुरु वचन का मर्म बताएँ, खुद जीकर जो सिखाएँ
वही आनंदी माँ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...
भवसागर में फंसे जीव को, प्रभु की राह दिखाएँ
ये ऐसा दीप स्तंभ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...

दिव्य हार्द समझाए तू, गुरुजी की अनोखी लीलाओं का
ओय होय... दिव्य हार्द समझाए तू...
दिव्य हार्द समझाए तू, गुरुजी की अनोखी लीलाओं का
मायिक भाव टालती ऐसे, जतन करती स्वरुप से संबंध का
कड़ी नज़र करती सूचन, कभी प्रेम की गंगा बहाये
वही आनंदी माँ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...
गुरु वचन का मर्म बताएँ, खुद जीकर जो सिखाएँ
वही आनंदी माँ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...

प्राण तो बसे गुरुजी में, रंग गईं पूरी उनके रंग में
ओय होय... प्राण तो बसे गुरुजी में...
प्राण तो बसे गुरुजी में, रंग गईं पूरी उनके रंग में
उनके वचन पर जी कर, जीती माया से हर जंग में
इक्का तुरुप का गुरुजी का, हाश गुरु की दिलाए
वही आनंदी माँ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...

गुरु वचन का मर्म बताएँ, खुद जीकर जो सिखाएँ
वही आनंदी माँ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...
भवसागर में फंसे जीव को, प्रभु की राह दिखाएँ,
ये ऐसा दीप स्तंभ हैं, मेरी आनंदी माँ हैं...

तपोभूमि ब्रह्मज्योति की स्मृतियाँ...

27 दिसंबर 2025 – प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी का 81वाँ प्राकट्योत्सव

28 दिसंबर 2025 - सांकरदा मंदिर का पाटोत्सव...

गुणातीत ज्योत में प.पू. तारा बहन का 95वाँ प्राकट्य पर्व...

परम पूज्य गुरुजी की आज्ञा से प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी के 81वें प्राकट्य पर्व निमित्त गुणातीत समाज के केन्द्रों के दर्शनार्थ...

गुरुहरि काकाजी महाराज, गुरुहरि पप्पाजी महाराज एवं **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** व **प.पू. दिव्य सोनाबा** की दिव्य हूँफ से प्रस्थापित हुए गुणातीत समाज के केन्द्रों में जब-जब कोई उत्सव-प्रसंग आयोजित हुआ है, तब-तब परिस्थिति या अपने स्वास्थ्य को नज़रअंदाज़ करके **प.पू. गुरुजी,** गुणातीत स्वरूपों के प्रति अपनी भक्ति अदा करने और मुक्तों को अपने दर्शन-आशीर्वाद से सराबोर करने अवश्य पहुँचे ही हैं। परंतु, गुणातीत समाज के ऐक्य का दर्शन कराने और मुक्तों को जड़ ग्रंथियों से छुड़ाने के लिए नाभि का भजन करवाने हेतु प.पू. गुरुजी ने **26 सितंबर 2025** से जो अस्वस्थता ग्रहण की, उसे ध्यान में रखते हुए चिकित्सकों ने उन्हें फिलहाल दिल्ली से बाहर विचरण के लिए मना किया है। अतः **27 दिसंबर 2025** की सायं गुजरात के **'छाणबोई'** गाँव में सोखड़ा के संतों द्वारा **'शिक्षापत्री द्विशताब्दी, ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी व प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी की दीक्षा हीरक जयंती तथा प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी के 81वें प्राकट्य दिन-आत्मीय युवा महोत्सव'** के त्रिवेणी उत्सव का लाभ लेने के लिए प.पू. गुरुजी की आज्ञा से **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी,** कुछ संतों, मुक्तों एवं **प.पू. दीदी** के साथ कुछ बहनों का गुजरात जाने का कार्यक्रम तय हुआ।

दिल्ली मंदिर में संतभगवंत साहेबजी द्वारा 25 दिसंबर 2022 को प्रतिष्ठित हुई प.पू. गुरुजी की मूर्ति के स्मृति दिन और Christmas यानी **25 दिसंबर 2025** की सुबह कुछ संत, मुक्त और **पू. स्वाति दीदी** के साथ बहनें by road दिल्ली से गुजरात के लिए रवाना हुए। रात को **उदयपुर** में **पू. आशीष पुरीजी** ने ठहरने की व्यवस्था की थी। सो, रातभर यहाँ ठहर कर **26 दिसंबर** की सुबह नाश्ता करने के बाद, अमदावाद के लिए रवाना होकर दोपहर तक **पू. परेशभाई दोशी** के घर पहुँच गए। इसी दिन सुबह की flight से **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, पू. शीतलदासस्वामी,** कुछ मुक्तों के साथ अमदावाद पहुँच कर इनके घर आ गए। **पू. जितेन्द्रभाई ठाकर** जो पहले अमदावाद ही रहते थे, लेकिन अब स्थायी रूप से अमेरिका रहने गए वे भी आए हुए थे। उनका **60वाँ जन्मदिन** था, सो उस उपलक्ष्य में श्री ठाकुरजी को केक अर्पण करके, **प.पू. गुरुजी** की ओर से पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी ने उन्हें स्मृति भेंट दी और फिर सबने प्रसाद

लिया। **प.पू. दीदी** भी कुछ बहनों और भक्तों के साथ दोपहर की flight से अमदावाद पहुँचने वाली थीं। परंतु, 25 दिसंबर को अचानक तबीयत थोड़ी नासाज़ होने के कारण वे नहीं जा पाईं और अन्य बहनें-भाभियाँ गईं।

प्रसाद लेने के बाद **भगवान स्वामिनारायण** के समय के **सद्गुरु श्री आनंदानंदस्वामीजी** द्वारा **'जेतलपुर'** में निर्मित मंदिर के दर्शनार्थ गए। यहाँ के महंतश्री ने संतों-मुक्तों की आवभगत की। अल्पाहार लेने के पश्चात् रात 8:00 बजे तक सभी मोगरी-अनुपम मिशन पहुँच गए। **'निज मंदिर'** में श्री ठाकुरजी के दर्शन के पश्चात् **'योगी प्रसाद'** भोजन गृह में संतभगवंत साहेबजी की निश्रा में नैवेद्य लिया। तत्पश्चात् **'अक्षरमहोल'** में संतभगवंत साहेबजी के सान्निध्य में सभा हुई। तब प.पू. गुरुजी को याद करते हुए पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, संतों-मुक्तों, प.पू. दीदी व बहनों के प्रति अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए **संतभगवंत साहेबजी** ने आशीष वर्षा की—

काकाजी की भावना थी कि शास्त्रीजी महाराज का संकल्प है कि भारत की राजधानी में अक्षरपुरुषोत्तम विराजमान हों। तो, उनके प्रति अपरंपार भक्ति अदा करते हुए, उनका वचन साकार करने काकाजी ने गुरुजी को सांकरदा से दिल्ली जाने के लिए कहा। उस समय दिल्ली में रहने का स्थान नहीं और एक भी भक्त नहीं था, तो गुरुजी मना करते थे। क्योंकि वहाँ जाकर क्या करते? पर, नंदाजी के advisor चंद्रभान शर्मा 'साधु समाज' के trustee और नंदाजी प्रमुख थे। सो, दिल्ली आकर गुरुजी वहाँ रहे और शून्य में से सर्जन किया। शुरुआत में उनके साथ प्रेमस्वामी और अनुपम मिशन से अरुणभाई सेवा में गए थे।

1967 में पप्पाजी ने श्रीजी कॉलोनी की terrace पर गुरुजी का विदाई समारोह रखा था। ***अधिकतर सब मनमुखी होकर फिरते रहते हैं, लेकिन गुरुजी ने स्पष्ट कहा था कि भले मेरी इच्छा नहीं है, मगर काकाजी की है इसलिए जाऊँगा, इसे गुरुमुखी बोला जाए। हमारा मन मानता है या नहीं; वो important नहीं है, पर गुरु ने कहा है तो करना है। काकाजी के संकल्प से दिल्ली में कैसा अद्भुत मंदिर और समाज तैयार किया।*** *आज दिल्ली से संत, सेवक और बहनें आई हैं।* ***गुरुजी का right hand यानी सुहृदस्वामी!*** *गुरुजी अब दौड़ाभागी नहीं कर पाते, लेकिन उन्हें कुछ भी करना हो, तो सुहृदस्वामी, संतों, युवकों और संत बहनों की टीम लग पड़ती है। गुरुजी की आँख के इशारे से उनकी देह चलती है।* ***पप्पाजी*** *का ब्रह्मवाक्य है—* ***Speak less work more, let your result speak for you. सुहृदस्वामी को कभी बोलते हुए नहीं सुना होगा, पर भक्तों का इतना ध्यान रखते हैं।*** *किसे क्या पसंद है, वो सब उन्हें पता होता है। इतना*

बढ़िया प्रसाद बनाते हैं, उनका हाथ special है। मैं दिल्ली में खाना खाने बैठता हूँ, तो पूछना पड़ता है कि किसने बनाया? सुहृदस्वामी युवा संतों के साथ मेलजोल का स्वभाव रखकर care करते हैं। आनंदी दीदी और बहनें भी supportive हुए हैं।

तत्पश्चात् संतभगवंत साहेबजी के आदेश पर **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** ने सबकी ओर से आशीष याचना की–

हम तो आपके दर्शन और आशीर्वाद लेने आए हैं। जिस हेतु से गुरुजी ने मुझे और बाकी सब संतों को साधु बनाया है, *वो हेतु हमारे जीवन में सांगोपांग पार उतरे और भगवान की मूर्ति सिद्ध कराने का उनका जो संकल्प है; वो हमारे जीवन में साकार हो, ऐसा दिल्ली मंदिर के संतों, युवकों, बहनों, हम सबको साहेबजी आशीर्वाद दें और गुरुजी को हम **'हाश'** कर पायें।*

पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी द्वारा अंतर से की गई प्रार्थना से राज़ी होकर तुरंत **संतभगवंत साहेबजी** ने **पुनः आशीर्दान** दिया–

शाबाश! गुरुजी को हाश हो जाए तो काम हो जाएगा, आप सब वैसे जीते हो। *संत, युवक, बहनें-सब संप, सुहृदभाव, एकता रखकर निर्दोषभाव से जीवन जीकर भक्तों की प्रभु के भाव से सेवा करते हो, इसलिए गुरुजी निश्चिंत बैठे हैं। वर्ना दौड़ाभागी उन्हें करनी पड़े, बाहर निकलना पड़े। पर, आपका इतना विश्वास है; तो गुरुजी की हाश अपने आप मिल जाती है, उसमें कहना ही नहीं पड़ेगा। अंतर ठंडा हो, ऐसे आप सब संत हो। बापा ने कितनी कृपा की, कोई उत्पात नहीं मचाते। बापा, काकाजी, पप्पाजी, महंतस्वामी के पास गुरुजी निर्दोषभाव से ऐसा जिए।* ***काकाजी की आज्ञा में रहकर गुरुजी 'काका रूप' हो गए; तो आप भी 'गुरुजी रूप' हो ही जाओगे, उसमें शंका नहीं है। जैसे प्रेमस्वामी ने स्वामीजी को हमेशा 'हाँजी' कहा, वैसे आप गुरुजी को हमेशा 'हाँजी' ही कहते हो। इसलिए जैसे प्रेमस्वामी 'स्वामी स्वरूप' हो गए, वैसे ही आप भी 'गुरुजी रूप' हो जाओगे।*** *इस बार मैं दिल्ली आया था, तब **गुरुजी** से सब पूछा था, तो तुम्हारे बारे में उन्होंने मुझे बहुत अच्छा कहा कि **मुझे सुहृद पर खूब विश्वास है, सब बढ़िया चलाएगा।** गुरु को हाश हो जाए, तो उनकी दृष्टि से तुम्हारा देह गुरुरूप हो जाता है। भगवान ने वरदान दिया है–तू मेरे ज़िकर में तो मैं तेरी फ़िकर में। मगर कई अपनी ही फ़िकर में खोए रहते हैं, तो फिर वे दुःखी भी होते हैं। ज़िकर मतलब ये है कि भगवान को राज़ी करने की लगन रख कर जो साधक जीता है, उसकी फ़िकर भगवान करते हैं और जब भगवान फ़िकर करें, तो गुरुरूप हुए बिना रह नहीं सकते, ऐसा आप जीवन जीते हो।*

अंत में **पू. पीटरभाई** ने माहात्म्यगान किया और फिर पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी, संतों-मुक्तों और पू. स्वाती दीदी व बहनों को टीका करके-प्रसादी का खेस ओढ़ा कर सत्कार किया। अनुपम मिशन में बहनों की और संतगण व सेवकों की हरिधाम में ठहराने की व्यवस्था की गई थी। सो, संतगण व सेवक अनुपम मिशन से प्रस्थान करके देर रात्रि को हरिधाम पहुँचे।

27 दिसंबर–प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी के **81वें प्राकट्य दिन** की मंगल प्रभात में हरिधाम मंदिर के **'ज्ञानयज्ञ हॉल'** में महापूजा आरंभ हुई और प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों एवं वरिष्ठ संतों के करकमलों से पाँच मुमुक्षुओं को **साधक दीक्षा** दी गई। फिर गुणातीत स्वरूपों के निम्न आशीर्वाद से दीक्षा विधि संपन्न हुई–

प.पू. निर्मलस्वामीजी

शास्त्रीजी महाराज और बापा के समय में यदि कोई दीक्षा के लिए 'हाँ' कहता, तो किसी भी स्थान पर, चलते-फिरते दीक्षा देकर साधु बना देते। क्योंकि उस समय मुश्किल से कोई साधु बनता था... आज तो मुमुक्षु सामने से दौड़ कर साधु बनने आते हैं। मुझे साधु की दीक्षा लिए 75 साल हुए। मुझे छोटी उम्र में दीक्षा दे दी थी। तब कई बार तो ऐसा होता कि शाम को साधु बनाये हों और सुबह वापस चले जाते थे। पर, ***हम टिके तो यहाँ तक पहुँच पाये, वो गुरु का प्रताप है।*** *बापा के पास कोई भी जाता, तो वे कहते–बोलो बनना है। वो बेचारा बोलता–बनना है, पर पता नहीं होता था कि क्या बनना है? पर,* ***ये जो साधु बने हैं, वो तो शूरवीर कहे जाएँ। पर जो शूरवीर न हो, उन्हें भी मैं तो यही कहूँगा कि साधु बनने में बहुत माल है... पूर्व के पुण्य प्रगट हों, तब साधु बन पाते हैं।*** *कई कहते हैं कि इन लोगों को तो साधु बन कर लड्डू खाकर मौज करनी है। पर, मैं कहता हूँ कि एक बार आकर देखो, फिर पता चल जाएगा कि कैसी मौज है। ये जो नए साधु बने हैं, उनकी घड़ाई तो अब गुरु करेंगे।* ***गुरु के पास सब हथियार हैं, इसलिए जैसा घड़ना होगा वैसा स्वामीजी घड़ेंगे... ऐसे गुरु को राज़ी करेंगे, तो अपना काम हो जाएगा।*** *जो यहाँ बैठे हैं वो भले साधु बनने के लिए तैयार न हों, पर इन पाँचों का गुण लेना और उससे बढ़कर उनके माता-पिता का गुण लेना कि ऐसे बच्चे तैयार किए...* ***प्रेमस्वामी ने आध्यात्मिकता की स्कूल खोली है, जिसे दाखिल होना हो–कोई fees नहीं। पर, मेहरबानी करके जुड़ जाना, संसार में कोई स्वाद नहीं है... प्रेमस्वामी का सत्संग करना, धरती पर ऐसे गुरु नहीं मिलेंगे। जो किसी को नहीं मिले, वो हमें मिले हैं।*** *दुनिया में जो होना हो वो हो, हमें बस इन्हें राज़ी कर लेना है।* ***बापा ने स्वामीजी से कहा था कि ये प्रेमस्वामी तुम्हारी परछाईं बन कर रहेंगे, तो आज हम वो दर्शन करते हैं...***

प.पू. दिनकर अंकल

*...उभराट शिबिर से सभी स्वरूपों ने **प्रेमस्वामी का प्रागट्य उत्सव** मनाना शुरू किया। आज भी उसी तरह हम 81वाँ मना रहे हैं। **इस उम्र में भी उनकी सेवा और विचरण करने में जो स्फूर्ति है, तो ऐसा लगता है 81 नहीं, 18 के हैं। विदेश में भी सब जगह भक्तों को वे खूब बल देते हैं।** पाँच संतों की आज दीक्षा विधि हुई। पिछले चार सालों में प्रेमस्वामी ने कई मंदिर और संत बनाये। **ये संत नए लगते हैं, पर महाराज के समय से आते हैं और प्रगति कराने के लिए महाराज ने इन्हें बुलाया है... तो, ब्रह्मरुप होकर परब्रह्म की भक्ति करनी है।** दीक्षार्थियों के माँ-बाप को भी धन्य है। जैसे निर्मलस्वामी ने बताया कि शास्त्रीजी महाराज और बापा के समय में और उसके बाद भी संत बनाना आसान नहीं था, पर **आज हम देखते हैं कि पढ़े-लिखे, अच्छा कमाते हुए लड़के महंतस्वामी के पास भी साधु बनते हैं, दिल्ली में गुरुजी के पास भी साधु बनते हैं और भगवा वस्त्र न पहनते हुए साहेब दादा, पवई में भरतभाई, वशीभाई और अन्य जगहों पर साधक बनते हैं। तो, वो उनकी मुमुक्षुता है। गुणातीतानंदस्वामी** ने दूसरे प्रकरण की दूसरी बात में कहा कि **तीन levels हैं। एक संस्कार, दूसरा आशीर्वाद और तीसरा मुमुक्षुता।** जगत के जीव को गुणातीत सत्पुरुष का आसरा हो। जीव यानी मनुष्य ही नहीं, पशु-पक्षी-पेड़ को भी यदि ऐसे संत का संबंध हो, तो उसमें **संस्कार** उदित होते हैं। संस्कार यानी क्या? पेड़ के नीचे संत ने आश्रय लिया हो, तो पेड़ के संस्कार उदित हो गए। सूख जाने के बाद अगले जन्म में वह पेड़ नहीं, मनुष्य बनेगा और संत की शरण में जाएगा। ऐसे कई जन्मों के संस्कार से हम सब आज यहाँ इकट्ठे हुए हैं। इसलिए आज नहीं तो future में कभी भी हम साधु तो बनने ही वाले हैं। जिसके जल्दी संस्कार उदय होते हैं, वो जल्दी number लगा देता है... सत्पुरुष के **आशीर्वाद** से उसमें मुमुक्षुता जाग्रत होती है। फिर संत के अभिप्राय और अनुवृत्ति के मुताबिक़ सेवा करके उन्हें राज़ी करना है। हम सब उसी दिशा में दौड़ रहे हैं। तीसरा है **मुमुक्षुता** यानी मोक्ष प्राप्ति की इच्छा, जन्म-मरण के चक्कर से छूटने की technique. जैसे कि **हम कितना भी कूदें, पर gravity के कारण पाँच-छः फुट से अधिक नहीं कूद पाएंगे। कोई expert होगा, तो पंद्रह-बीस फुट कूदेगा पर उससे ज़्यादा नहीं। पर यदि rocket में बैठ जाएँ, तो moon, mars तक पहुँच जाएँगे। Gravity को defy कर पाएंगे। वो rocket गुरुरूपी वाहन है, जो हमें जन्म-मरण के चक्कर से छुड़ा कर अक्षरधाम में पहुँचाएगा। पर, ऐसे rocket में बैठने के लिए, ऐसी पात्रता लाने के लिए हमें ऐसे गुरु बार-बार ब्रह्मज्ञान देते हैं। उसे हम जितना पचायेंगे,***

उतनी पात्रता बढ़ेगी। *ऐसी आशीष इन पाँचों को मिले। इन लोगों ने अपने जीवन के final goal तक पहुँच जाने का तय किया है। तो, जैसे निर्मलस्वामी बोले, तो* ***हमें टिक जाना है। उसके लिए अपने अहंता–ममता को तोड़ कर देहभाव से परे होना है।*** *उसके लिए आत्मनिष्ठा और स्वरूपनिष्ठा चाहिए होगी। वो हमें इन संतों द्वारा प्रदान हो, वो ही प्रार्थना।*

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी

आज जिन्होंने दीक्षा ली है, इनमें से दो लड़के तो इकलौते हैं। फिर भी माँ-बाप ने माथे पर टीका और हाथ में श्रीफल देकर उन्हें खुशी से समर्पित किया है। कलियुग में ये आम बात नहीं। चार बेटों में से एक भी साधु होने के लिए देना हो, तब भी माँ रोएगी। ***जननी जियो रे गोपीचंद की... आज तो घर–घर में ऐसी जननियाँ हैं। संतों के साथ की प्रीति के नाते पूर्व के संस्कार जाग्रत हुए और संकल्प हुआ कि इस मार्ग पर चलना है। ये महाराज और हरिप्रसादस्वामीजी का कार्य है...***

दासस्वामी *से चला नहीं जाता, फिर भी मुझे कहते हैं कि स्वामीजी ने हरेक को सेवा सौंपी थी। पूना की तरफ का विभाग उनका है, तो मुझे कहते हैं कि मैं विचरण में हो आऊँ? मैंने कहा—चला तो जाता नहीं है। क्यों जाना? पर, उनकी उमंग ऐसी है।* ***स्वामीजी ने जिसे जो सौंपा है, उसमें वे खो गए हैं।*** *ये हमारे लिए स्वामीजी का दिया हुआ ख़ज़ाना है। Construction की सेवा में* ***संतस्वामी*** *के सब बाल झड़ गए, वे कभी भी फ़ारिग़ नहीं रहते।* ***त्यागस्वामी*** *college के लिए क़ुर्बान हो गए। स्वामीजी के वचन पर पूरा जीवन दे दिया...* ***निर्मलस्वामीजी 75 साल से साधु हैं। उनके जीवन में कितने उतार चढ़ाव आए! यहाँ हर पल मरना है। इसलिए स्वामी की बात में लिखा कि जीतेजी मरे और मर कर जिए, ऐसी दृढ़ता होनी चाहिए।***

निर्मलस्वामी ने स्कूल की सीढ़ी नहीं चढ़ी और ***हमारे संतस्वामी engineer हैं, पर इस बात की उन्हें consciousness नहीं है। यह बड़ा कठिन है, वर्ना कोई degree मिल जाए तो चाल बदल जाती है। इनकी सेवा देख कर स्वामीजी बोले कि इस संत ने मुझे हरा दिया।*** *कितनी बड़ी बात!* ***त्यागस्वामी विद्यानगर में पढ़ते थे, oratory में first number... मोदीजी ने उन्हें गुजरातभर के private schools and colleges के संगठन का president बनाया था। स्वामीजी कहते कि इसमें बारह collectors जितनी बुद्धि है।*** *बुद्धिशाली व्यक्ति को भक्ति का ख्याल नहीं होता; उसे झुकना नहीं आता, सिर्फ़ दूसरों को झुकाना ही आता है।* ***पर, वे सबके***

आगे झुकते हैं। *स्वामीजी बोले थे कि उसमें विवेकानंद जैसी बुद्धि और माँ शारदा जैसी भक्ति है। समग्र स्त्री जाति में माँ शारदा जैसी भक्ति किसी में नहीं प्रगटी, ऐसा स्वामीजी कहते थे।* ***ये सुहृदस्वामी बैठे हैं,*** *वो अपने सोखड़ा के हैं।* ***गुरुजी की इतनी प्रसन्नता का पात्र हैं, अधिकार का पात्र हैं। जब गुरु अधिकार करें, तो वो बात अलग पड़ जाती है।*** *वर्ना ज़्यादातर तो सहलाते ही रहते हैं।* ***श्वेतस्वामी, गुणग्राहकस्वामी सब संत साधुता की अद्‌भुत मूर्तियाँ हैं। स्वामीजी ने हमें तैयार थाली परोसी है।*** *सिर्फ़ साथ बैठ कर सुहृदभाव और आत्मीयता का आनंद ही करना है।* ***साहेब, अश्विनभाई, रतिभाई, बैरिस्टर, आनंदस्वरूपस्वामी, भगवत्स्वरूपस्वामी, साधुस्वरूपस्वामी ये सब सोखड़ा के हैं। भगवत्स्वरूपस्वामी*** *परम साधुता की मूर्ति हैं, कभी गरम ही नहीं होते।* ***साधुस्वरूपस्वामी*** *जो सौंपा हो, वो पूरा करके रहते हैं।* ***साधु होने के बाद बहुत तरह के विचार आते हैं, पर गुरु के वचन से उन विचारों पर पैर रख कर–उन्हें दबा के वर्तें, तब जाकर साधुता प्रगटती है। साधना से कुछ नहीं होता, सिर्फ़ गुरुकृपा से ही सब होता है। दिनकरभाई अमेरिका से आए हैं। भगवा वस्त्र नहीं पहने, पर साधुता की मूर्ति हैं। काकाजी का अद्‌भुत सेवन किया है।*** *अमेरिका में वे हर रोज़ सुबह दो घंटे online गोष्ठी करते हैं, तो पाँच-सात सौ भक्त जुड़ते हैं। तुम एक दिन तो करके देखो। उन्हें बिलकुल कंटाला नहीं आता, सबको इतना प्रेम देते हैं...*

बापा को सोखड़ा खूब प्रिय था। *उन्होंने अपनी diary में ख़ुद लिखा है कि सोखड़ा की हर एक गली पावन की है। कितनी बड़ी बात! सोखड़ा की महिमा आप नहीं जानते। बापा ने संस्था से आने के बाद हमें कहलवाया था कि सोखड़ा में रहो, सब अच्छा हो जाएगा। देखो, आज कैसा बढ़िया हो गया! विमुख प्रकरण के बाद एक भाई साहब मेरे लिए संदेश लेकर special आए थे। स्वामीजी ने मुझसे कहा कि तू सुन ले। पर, मैंने मना कर दी। मेरा पूर्वाश्रम का परिवार baps में था, उन्होंने सोचा कि अपना लड़का वहाँ फँस गया है। तो मेरे बड़े भाई बापा के पास गए।* ***बापा बोले–यहाँ वालों का कल्याण मुझे करना है और जो उधर हैं, वे भी मेरे बच्चे हैं उनका कल्याण भी मुझे ही करना है।*** *तब डाह्याकाका बापा के पास अटलादरा गए और उन्हें बोले कि ये संत जो आये हुए हैं, ऐसा कुछ हो तो मैं सबको alembic में नौकरी दिलवा दूँ?* ***बापा बोले–ये हरिप्रसादस्वामी का तुम्हें ख्याल नहीं है। जब महाराज का ऐश्वर्य उनमें खिल उठेगा, तब आप देखते रह जाओगे। साथ ही ऐसी जाग्रतता भी दी कि तब अहंकार मत करना। उसी***

तरह आज ये लड़के भी ऐसे तैयार होंगे, मुझे विश्वास है। *हमने पीछे जो बारह संत बनाये, उन्हें बारह lessons दिए हैं। बस इन पाँचों को भी वो पकड़ कर रखने हैं। फिर दुनिया की कोई व्यक्ति-शक्ति प्रभावित नहीं कर पाएगी। उनके मन-बुद्धि भी उन्हें परेशान नहीं कर पाएंगे। बस वो पकड़ कर रखना और कोई साधन नहीं है।* ***वरिष्ठों तथा छोटों के समक्ष झुक कर रहना। ये कपड़े पहन कर कोई बड़ी धाड़ नहीं मार दी है, ध्यान रखना। हम मरने आए हैं, केसरिया करने।*** *इतिहास में हमने पढ़ा है कि राजपूत केसरिया करते थे, तो कटारी मार के फिर पट्टा बांध कर लड़ने जाते थे, ये मार्ग भी ऐसा ही है। स्वामीजी खूब राज़ी होते होंगे, क्योंकि समझदारीपूर्वक दीक्षा ले रहे हैं।*

...ये स्वामीजी का कार्य है और वे ही हमसे करवा रहे हैं। बस यही संकल्प करना कि हरिधाम की धरती में ही राख होना है। हरिधाम ही अब मेरा घर है। माँ-बाप समान इन संतों की गोद जँचनी चाहिए। कोई डाँटे-टोके तो बापा का आनंद बढ़ता जाता था। *कोई नफ्फट हो तो उसे आएगा या* ***जो सच में समझता हो कि इनमें रहकर स्वामी ही बोल रहे हैं, तो उसका आनंद बढ़ेगा। सो, ऐसी समझ रखना, मन के दायरे में नहीं रहना और खुल्ले दिल से संतों के पास वर्तना। इससे सरल कोई साधना नहीं है।*** *हम लोगों ने कुछ नहीं किया, बस खा-पीकर मज़े किए हैं। पर, स्वामीजी की कृपा हो गई, क्योंकि हम सरल रहे। बापा ने किसी से कहा कि तालाब में जाकर नहाना। उसमें कीड़े घूमते, इतनी गंदगी थी, तब गोंडली घाट पर पानी नहीं था, दुर्गंध मारती थी। पर, स्वामीजी-प्रभुदासभाई उनके भगवदी थे। तो, उनसे पूछा कि बापा ऐसा कहते हैं, तो क्या करना? स्वामीजी बोले नहा कर नल के नीचे बैठ जाना। मेरे जैसा भगवदी होता, तो कहता कि चुल्लू भर पानी सिर पर चढ़ा दे। पर, वो सच्चे भगवदी थे, इसलिए ऐसा सिखाया।* ***बस दो हाथ जोड़कर, जैसे आप कहो, जैसे आप कहो—यही कहना है। बुद्धि चलाओगे, तो मार खाओगे। फिर चाहे सेवादार हो, कथाकार हो कोई भी हो...*** *सभी स्वरूपों से प्रार्थना कि इस रास्ते चलने का हमें बल देकर हमारा जीवन कृतार्थ करें।*

कुछ महीने पहले ही दिल्ली मंदिर से जुड़े पुराने हरिभक्त **पू. डाह्यालालभाई पंचाल** अपने पुत्र **पू. अशोकभाई पंचाल** एवं परिवार सहित वडोदरा स्थायी रूप से रहने गए है। सो, इसी दौरान अनुपम मिशन में ठहरे पू. स्वाति दीदी, बहनें व कुछ मुक्त यहाँ से सुबह 10:30 बजे वडोदरा उनके घर जाने के लिए रवाना हुए। दोपहर साढ़े बारह बजे तक उनके घर पहुँच कर श्री

ठाकुरजी का थाल करके प्रसाद लिया। फिर धुन-भजन करने के पश्चात् दोपहर 4:00 बजे यहाँ से निकल कर, अनुपम मिशन द्वारा संचालित 'वेमार' मंदिर 5:15 बजे तक पहुँच गए। संध्या आरती एवं भजन का लाभ लेने के पश्चात् प्रसाद लेकर, सायं 6:30 बजे **'आत्मीय युवा महोत्सव'** के स्थल गाँव **'छाणबोई'** पहुँचे। पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी के साथ संतगण एवं सेवक भी हरिधाम से उत्सव स्थल पर आ गए थे। उत्सव की मंगल शुरुआत करते हुए आत्मीय हरिभक्त **पू. हेमंतभाई वसावा** ने प्रासंगिक उद्‌बोधन किया। तत्पश्चात् **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने कलात्मक रथ पर विराजमान होकर आगमन किया और फिर सत्संग के युवाओं ने **ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज** के साथ **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** एवं **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** के स्मृति प्रसंगों का नृत्य नाटिका के रूप में **'हरिप्रेम हीरक दीक्षा पर्व'** का हार्द समझाया। मंच पर प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी के आसीन होने के उपरांत उनका और वहाँ उपस्थित गुणातीत समाज के केन्द्रों के वरिष्ठ संतों एवं गणमान्य अतिथियों का पुष्प हार पहना कर व खेस ओढ़ा कर स्वागत किया गया। गुजरात प्रदेश काँग्रेस समिति के प्रमुख **पू. अमितभाई चावड़ा** तथा आत्मीय स्वजन **पू. कमलेशभाई पटेल** ने अपने हृदय भाव व्यक्त किए। तत्पश्चात् **संतभगवंत साहेबजी** ने उत्सव मंच पर प्रवेश किया। सबने तालियों से उनका अभिवादन किया। फिर **पू. श्रुतिप्रकाशस्वामीजी** ने सभी की ओर से आशीष याचना की और केन्द्रों से आए प्रतिनिधियों ने **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी को हार अर्पण** करके आशीर्वाद प्राप्त किया। दिल्ली मंदिर-**प.पू. गुरुजी** की ओर से भेजा हुआ सुंदर कलात्मक हार **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** तथा **पू. आनंदस्वरूपस्वामी** ने अर्पण किया। इस कलात्मक हार में **श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज** एवं **ब्रह्मस्वरूप हरिप्रसादस्वामीजी** की विभिन्न मूर्तियों सहित उत्सव का चिन्ह व नाम **'साधुता पर्व-हरिप्रेम हीरक दीक्षा पर्व'** अंकित किया था। हार द्वारा अभिवादन के बाद गुजरात सरकार में कैबिनेट मंत्री **श्री अर्जुनभाई मोढवाडिया** ने प्रेरक संदेश दिया और **श्री संजयभाई सारठिया** ने हरिप्रेम हीरक दीक्षा पर्व निमित्त 'भक्ति डायरा' प्रस्तुत करके नमन किया। तदोपरांत **संतभगवंत साहेबजी** तथा **प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी** ने त्रिवेणी संगम में सबको सराबोर करने निम्न आशीष वर्षा की—

संतभगवंत साहेबजी

...ये सब संत महंतस्वामी, डॉ. स्वामी, भक्तिप्रिय, कोठारीस्वामी, हरिप्रसादस्वामी, प्रेमस्वामी हमें बापा और काकाजी द्वारा दी गई भेंट हैं। *प्रेमस्वामी पूर्वाश्रम में धर्मज गाँव के पाटीदार,*

अच्छे धनी परिवार के बेटे थे। उनके पूर्वाश्रम के पिताजी के चाचा वड़ताल में साधु हुए थे, बृहद वैरागी थे। शास्त्रीजी महाराज ने उपासना के लिए जब वड़ताल छोड़ा, तब उनके साथ के पाँच संतों में से वे एक थे।

प्रेमस्वामी बापा के selected पात्र हैं। *'पाली' में पारायण की पूर्णाहुति के समय बापा ने विद्यानगर से अश्विनभाई, शांतिभाई और मुझे बुलाया था। सभा के बाद हमें बुलाकर बापा ने कहा— विद्यानगर में प्रफुल्ल नामक लड़का पढ़ता है, उसे हमें बनाना है। समझ नहीं आया कि उसे क्या बनाना है? Graduate बनाना है? Industrialist बनाना है? पर, उनका मतलब था—साधु बनाना है। बापा बोले—उसे अपने साथ रहने बुला लेना। हम बापा की आज्ञा से university hostel के एक कमरे में मंदिर बनाकर भजन-भक्ति के साथ अभ्यास करते थे। जिस बंगले में धर्मज ग्रुप के विद्यार्थी रहते थे, वहाँ से प्रफुल्ल को विट्ठलदास और सनंदभाई ले आए। प्रफुल्ल को ख़ुद भी पता नहीं था कि बापा उसे साधु बनायेंगे।* ***51 संत बनाने के समय बापा युवकों को इतना लाड़ करते, अपने साथ घुमाते-रखते, फिर भी युवक मानते नहीं थे, जबकि प्रफुल्ल-प्रेमस्वामी ने बापा का वचन तुरंत पकड़ लिया।*** *वो कैसे? तो बापा दृष्टांत देते थे कि कई मोतियों की क़ीमत लाखों में होती, कइयों की हज़ारों में और कई मोती रुपये के सौ मिल जाते हैं। दिखने में सारे सरीखे होते हैं, फिर फर्क़ क्या पड़ा? तो, स्वाति नक्षत्र में जो मछली कूद कर बारिश की बूंद तुरंत पकड़ लेती है, उसमें से लाख वाला मोती बनता है। जो मछली पानी की बूँद को समंदर की सतह पर पकड़ती है, वो हज़ारों का और कुछ मछलियाँ आलसी होती हैं, वो पानी के अंदर ही रहती हैं और जो बूँद मिल जाए उसे ले लेती हैं। फिर वो मोती रुपये के सौ मिलते हैं। वैसे ही* ***प्रेमस्वामी ने बापा का वचन स्वाति नक्षत्र की बूंद मुंह में लेने वाली मछली की तरह तुरंत पकड़ा।*** *सामान्य रूप से चमत्कार, ऐश्वर्य, रिद्धि-सिद्धि वाले को हम साधु मानते हैं, वो ग़लत नहीं है। पर,* ***महाराज ने बताया कि तीन गुण, तीन अवस्था, तीन देह से परे जिसका जीवन हो, उसमें अखंड मेरा निवास है।*** *उसका हरेक उद्यम प्रभु को राज़ी करने के लिए होता है...*

बापा ने प्रफुल्ल से कहा कि प्रभुदास की आज्ञा में उसके साथ ही रहना, तो जीवनभर उन्होंने स्वामीजी के पास हमेशा उमंग से सिर्फ़ हाँजी ही कहा। तो, गुरुकृपा से गुरुरूप हो गए...

महाराज बोले थे कि मैं इस ब्रह्मांड में ऐसे संतों द्वारा प्रगट रहूँगा। अपनी उपासना प्रगट की है। इस

उत्सव में जिन जिन्होंने सेवा की है, उन सब पर प्रेमस्वामी ने आशीष बरसाये। सब उन्हें अपने जीवन में केंद्र स्थान पर रखें और एक रुचि से प्रभु प्रसन्नता पाने के लिए जाग्रत रहें, ऐसा बल देना।

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी

मेरे जीवन में बापा न आए होते, कॉलेज में साहेब की गोद न मिलती, साधु बनने पर मेरा हाथ स्वामीजी को न सौंपा होता तो मैं क्या करता होता, वह बड़ी सोचने वाली बात है? ***जीवन में प्रभुधारक संत मिलें, तो फिर दो ही चीज़ें करनी चाहिए—एक तो दो हाथ जोड़ कर 'हाँ में हाँ और न में न' और दूसरा 'सरलता'।*** *फिर सब वे करेंगे, हमें कुछ नहीं करना। सत्संग खूब, खूब, खूब आसान है, तो ज्ञान फैलाना और हमें जो संत मिले हैं उनमें खो जाना। स्वामीजी कहते थे कि आप यदि सच में राम उपासक हो, तो हनुमानजी जैसे साधु ढूँढ कर उनमें समा जाओ। शिवशक्ति के उपासक हो, तो गणेशजी जैसे साधु ढूँढ कर उनकी गोद में समा जाओ। कृष्ण के उपासक हो, तो सुखदेव जैसे संत ढूँढ कर उनकी गोद में समा जाओ। स्वामिनारायण के उपासक हो, तो बापा जैसे संत को ढूँढ कर उनकी गोद में समा जाओ। उनमें अपने अस्तित्व को विलीन कर देंगे, तो वे हमें अपने जैसा सुखी कर देंगे।*

हम खूब भाग्यवान हैं कि स्वामिनारायण का आसरा मिला, उससे बढ़कर अक्षरपुरुषोत्तम उपासना मिली, उससे बढ़कर स्वामीजी ने हमारा हाथ थामा और ऐसे गुणातीत पुरुषों की गोद में बिठा दिया। बस उनके हृदय में 'हाश' कर दें, यह हमें अंतर से दृढ़ करना है। *स्वामीजी को दीक्षा लिए साठ साल हुए। उन्होंने मेरे और आपके लिए अपने जीवन के साठ साल खर्च कर दिए, कुछ सोचा नहीं। वे जब युवक थे तब से बापा का नहीं, बल्कि उनके अल्प संबंधी का सेवन किया। जबकि सेवन तो हमें उनका करना चाहिए। उनका क्या ऋण चुकायेंगे, बस आज मिलकर ये संकल्प करें कि केवल उनके ढंग से, उनकी पसंद में और उनके बल से जीना है।* ***स्वामीजी सुबह उठते ही पहला शब्द 'दास का दास' बोलते और सोने जाए तब भी आख़िर में वो ही शब्द कहते। उनकी धड़कन–ख़ून के हर cell में यही आरज़ू थी, क्योंकि वे महाराज और गुणातीत पुरुषों के जीवन में डूब गए थे। साहेब ने कहा कि हमें संप, सुहृदभाव, एकता से जीना है। घर में–मंडल में प्रसंग तो बनेंगे ही, तब हम केवल सत्पुरुष की ओर निगाह रखें तो fail नहीं होंगे। यही बड़े पुरुष को हराने का आसान तरीका है। वेदरस में महाराज ने लिखा है कि कुसंगी का अभाव आया, तो भी तुम्हारे लिए अक्षरधाम के द्वार बंद हैं। तो, बस मैं और मेरे भगवान दो***

ही हैं, और कुछ है ही नहीं, ऐसा मान के जीना। *बापा के बल से हम जियें... वचनामृत गढडा प्रथम 18 के मुताबिक अपनी पाँचों इन्द्रियों को पवित्र रखना है... रात को भजन करके माफ़ी माँगें कि मैं गुनहगार हूँ, क्षमा करो...*

शिक्षापत्री द्विशताब्दी मना रहे हैं, ***महाराज ने उसमें कैसे अद्‌भुत आशीर्वाद दिए कि इसके मुताबिक़ जो वर्तेगा, उसे धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष चारों सिद्ध होंगे... शिक्षापत्री में महाराज ने यह भी लिखा है कि मेरी वाणी मेरा स्वरूप है। इसलिए हम actually महाराज का द्विशताब्दी महोत्सव मना रहे हैं। साहेब ने संप, सुहृदभाव, एकता की जो बात कही, तो उसका अर्थ यह है कि न सोखड़ा-न सांकरदा, न विद्यानगर-न मुंबई, न दिल्ली-न शिकागो, बल्कि सिर्फ़ एक अक्षरधाम ही है, हम सब अक्षरधाम के हैं।***

...हम सब बापा के ही बालक हैं ये कभी न भूलें। ***जहाँ भी हम जिस स्वरूप से जुड़े हैं, वहाँ सर्वोपरिभाव से जुड़ जाएँ।*** *साहेब ने आशीर्वाद दे दिए कि हम तन, मन, धन, आत्मा से सुखी हों। हम उस बात को आत्मसात् करके उस राह पर चलते हो जाएँ, ऐसी कृपा बरसाना।*

आशीर्वाद के बाद महाआरती एवं अद्‌भुत आतिशबाजी से उत्सव का समापन हुआ।

28 दिसंबर की सुबह सोखड़ा के पुराने मंदिर में दर्शन और पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी के पूर्वाश्रम के चचेरे भाई **पू. कपिलभाई** के घर पधरावनी करने के बाद संतगण-सेवक **सांकरदा मंदिर** गए। जहाँ मंदिर के **पाटोत्सव** और **प.पू. स्नेहलस्वामीजी** एवं **सेवक पू. बिंपलभाई** के जन्मदिन निमित्त सभा में निम्न आशीर्वाद प्राप्त किए—

प.पू. वशीभाई

*...**स्नेहलस्वामी** का बापा द्वारा बनाए 51 संतों में से 49वाँ नंबर है। बापा ने उनकी चेतना बदल दी। विज्ञानस्वामी ने बताया कि **He is a living computer, everything is noted in his mind with date and time.** अभी बापूस्वामी के साथ गुरुजी का दर्शन करने दिल्ली गए थे, तो दिल्ली मंडल ने उनका लाभ लिया। सारी पुरानी स्मृतियाँ, साधु होने के समय, विमुख होने के समय और फिर काका-पप्पा के साथ के विशिष्ट प्रसंग उन्हें याद हैं, वो हमारे लिए ख़ज़ाना है।*

आज प्रेमस्वामी के चरणों में प्रार्थना है कि ***स्नेहलस्वामी का birthday है, तो उनके जैसी साधुता हम में आए। महाराज को अति प्रिय अगर कुछ हो, तो वो साधुता है... वो सबको सरलता से***

सिद्ध हो। *सभी स्वरूपों, साधकों का स्वास्थ्य अच्छा रहे। महाराज स्नेहलस्वामी का स्वास्थ्य अच्छा रखें और उनमें से अपना कार्य करके, सबको सुखी करें... काका, पप्पा, बा को जो खूब पसंद था कि* ***हम गुणातीतभावना वाले साधु बन कर सेवा करें,*** *ऐसे जी पायें वो ही प्रार्थना।*

प.पू. स्नेहलस्वामीजी

...चार साल काका-पप्पा का समागम किया, तो हुआ कि मर जाना है-एकांतिक धर्म सिद्ध करना है। फिर ***बापा*** *का उत्तर मिला—* ***हे मेरे जीवन प्राण, भास्कर भगत। इतना पढ़कर ही खुमारी लग जानी चाहिए कि ओहो भगवान के साक्षात् स्वरूप ने हमें जीवनप्राण कहा!*** *वो कभी ऐसे ही नहीं बोलेंगे। फिर लिखा धीरे-धीरे करने की ज़रूरत है, जल्दबाज़ी नहीं। एकांतिक धर्म सिद्ध हो जाएगा।*

काकाजी *सोफे पर बैठे थे, मैं उनके सामने बैठा था। वे बोले कि* ***बापा में जो जुड़ेगा, उसे इंद्रिय अंतःकरण के गढ़ जीतने नहीं पड़ेंगे...***

हमें संत के प्रति दिव्यभाव तो है ही, पर निर्दोषभाव रहे कि वे सब ग्रहण ही करते हैं। फिर बापा जैसी स्थिति हो जाएगी... काका, पप्पा, स्वामी, अक्षरविहारीस्वामी का सपना था कि हम सब एक होकर रहें। *पप्पाजी कहते थे कि मेरे जीवन का संकल्प है कि किसी भी क़ीमत पर संप, सुहृदभाव, एकता रख कर गुणातीत समाज जिए और वचनामृत अंत्य 35 तथा अंत्य 26 जैसे साधु बने। 26 में लिखा है कि साधु इन्द्रिय अंतःकरण की क्रियाओं को दबा के वर्तता है, भगवान संबंधी क्रिया ही करता है, पंच वर्तमान में दृढ़ रहता है और स्वयं को ब्रह्मरूप मान कर परब्रह्म की उपासना करता है। ऐसे संत का पूजन करने से भगवान का पूजन होता है। महंतस्वामी कहते थे कि बिजली जैसे संत नहीं हुए, तो कुछ नहीं पाया। तो प्रार्थना है कि ऐसे निष्काम-निर्विकार हो जायें...*

प.पू. दिनकर अंकल

आज पवित्र दिन... ***बिंपलभाई और स्नेहलस्वामी के दर्शन करते हैं, तो शांति-शांति हो जाती है।*** *बिंपलभाई के नए-नए भजनों का कई सालों से लाभ लेते हैं... अक्षरविहारीस्वामी, प्रेमस्वामी, साहेब, गुरुजी, भरतभाई, वशीभाई सबके भजन बनाते हैं और स्वरूपों को धारते हैं। स्नेहलस्वामी के दर्शन करता हूँ, तो उनका हँसता हुआ मुखारविंद मुझे इतना भा जाता है कि बस उनको याद ही करा करें...*

बापा ने साधु बनाने की कितनी गरज़ ग्रहण की थी! भगवा वस्त्र पहना कर साधु करने थे, ऐसा नहीं था। उन्हें तो हृदय भगवा करने के लिए देहभाव और जीवभाव से ऊपर उठकर ब्रह्मभाव प्रगटाना था। स्वामी की बात में लिखा है कि ब्रह्मांड के सारे जीवों को ब्रह्मरूप करना है, गुणातीत करना है... गुणातीतानंदस्वामी ने करोड़ की ही बात करी। पर ऐसा साधु हरेक को होना ही है, तब तक ये चक्कर चालू ही रहेगा। *स्नेहलस्वामी ने बापा को राज़ी करने के लिए सामने से प्रार्थना की कि मुझे साधु बनाओ। बापा ने कहा कि खूब मुश्किलें आयेंगी, मार खानी पड़ेगी, अपमान होगा। पर, स्नेहलस्वामी बोले कि मैं आंतरिक या बाहरी सब मार खाने के लिए तैयार हूँ। तो वो पास हो गए... उनका goal यही है कि मुझे सबसे आगे दौड़ना नहीं है, पर एकांतिक धर्म सिद्ध करना है। ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म की भक्ति करनी है। तो, बस आनंद करते हुए जीना है...*

प्रगट ब्रह्मस्वरूप प्रेमस्वरूपस्वामीजी

...स्वरूपों को जो खूब पसंद था, ऐसा जीवन जीने का अंतर से दृढ़ ठहराव करें। Fail हों तो कोई चिंता नहीं है, पर जैसे काकाजी कहते थे कि रात को प्रायश्चित् रूप प्रार्थना करना और स्वामीजी कहते थे कि रोज़ का क़र्ज़ रोज़ चुका देना। *यहाँ अद्‌भुत मूर्तियां पधराईं हैं, इन्हें मूर्तियाँ न मानें, living स्वरूप हैं। यहाँ आकर भक्तिभाव से दर्शन, भजन, थाल आरती करें। ये सब सामान्य बातें हैं, फिर भी खूब असामान्य हैं।* ***बस टाइम हुआ आरती कर लो, टाइम हुआ भोजन खिला दो, वो अच्छी बात है। पर, उसमें भक्ति घोलोगे तो प्रभु साक्षात् खाएँगे, अपनी सेवा स्वीकारेंगे, हमारी प्रार्थनाएँ सुनेंगे। स्नेहलस्वामी के बारे में विज्ञानस्वामी ने बढ़िया वर्णन किया कि पार्षद थे फिर भी साधुता की मूर्ति थे। उन्हें दीक्षा लिए 65 साल हुए, पर कभी क्रोधित नहीं हुए, ऊँची आवाज़ में बात नहीं की। यह बहुत कठिन है। साधु होने के बाद ऊँचे आवाज़ में बोलना सहज ही हो जाता है। पर, उन्हें कभी 'मैं' का भाव ही नहीं। वो पूर्व के मुक्त की निशानी है। बापा अक्षरधाम से अपने साथ लाए।*** *वर्ना साधु होने के लिए थोड़ा कोई भजन करता है? बापा ने कितना प्रेम किया, तब मैं साधु हुआ... फिर भी मानो हम उन पर उपकार करते हैं। स्नेहलस्वामी उसी प्रकार राज़ी करने के लिए अक्षरविहारीस्वामी की सेवा में खो गए, कभी भी उन्हें मोहताज़ नहीं किया, बहुत बड़ी बात है। हम में भी वो भक्ति प्रगटे। भक्ति भगवान की देन है।* ***भक्ति में अपेक्षा होती है, पर इन्हें कोई अपेक्षा भी नहीं...*** *आज उनसे प्रार्थना कि हम सबके*

लिए वे प्रार्थना करें कि उन जैसी भक्ति और गरज़ हम में प्रगटे। भक्ति कौन सी? माहात्म्य ज्ञान सहित भक्ति, क्योंकि नवधा भक्ति में तो सिर्फ़ अहम् का ही पोषण होता है। वो ही स्वभाव बन जाता है। कोई सामने आ गया तो उसकी खैर नहीं, ऐसा हो जाता है। मानो सत्पुरुष उसके अकेले के ही हैं। पर, स्नेहलस्वामी के जीवन में वो कभी देखा नहीं।

हमारे भुलकुं बिंपलभाई का जन्मदिन... एक सरीखी सेवा करता है, मुंह में जुबान ही नहीं है। वर्ना अंतेवासी सेवक तो अपने पास कितने सारे अधिकार लेकर घूमता है। अपना एक स्वतंत्र जगत होता है। पर, इन दोनों के जीवन में ऐसा कुछ नहीं। जगत सिर्फ़ अक्षरविहारीस्वामी और कुछ नहीं। *ये खूब कठिन है और अंतेवासी सेवक के लिए तो और भी ज़्यादा। वो ये ही सोचेगा कि मुझे ही समझ आती है और किसी को समझ नहीं है। इतना अहंकार होता है। पर, ये दोनों हम सबके लिए आदर्श हैं। इतने शांत-प्रशांत, कभी गुस्सा नहीं और खूब स्थिरता से सेवा करते हैं। ये भक्ति माहात्म्य ज्ञान के बिना हो नहीं सकती। अक्षरविहारीस्वामी को धाम का स्वरूप मान कर उनकी सेवा की...* ***महाराज का आसरा, शुद्ध उपासना मिली बहुत अच्छा। स्वरूपों ने हमें अपना बेटा माना बहुत बढ़िया। पर, सबसे अच्छी बात ये कि ऐसे संतों-भक्तों के बीच रहना मिला।*** *सभी स्वरूपों से प्रार्थना कि हम सब की दृष्टि ऐसे संतों-मुक्तों की ओर निरंतर रहे। उस रास्ते चलने का हमें बल मिले।*

सभा के पश्चात् संत-आवास के पुनःनिर्माण की विधि संपन्न करके सबने प्रसाद लिया। इसी दौरान, **गुणातीत ज्योत में प.पू. तारा बहन का 95वाँ प्राकट्य पर्व** मनाया जा रहा था। सो, **पू. स्वाति दीदी** व बहनें इस पर्व में दर्शन-समागम का लाभ लेने गई थीं। सभा में मुक्तों के प्रासंगिक उद्बोधन एवं **प.पू. हंसा दीदी** के निम्न आशीर्वचनों का लाभ लिया—

प्रभु प्रसन्नता मिले वो ही करना। प्रभु में रह कर सब कुछ करेंगे, तो प्रभु की और मुक्तों की भी प्रसन्नता मिलेगी। हमारे स्वभाव-प्रकृति का tota। समर्पण होता जाए, वो करना है। *काकाजी ने समाधि के बाद जो पत्र लिखा उसमें सबके नाम थे, पर ताराबेन का नहीं था। उनको वो पत्र पढ़ कर shock लगा। पर, उन्हें नाम की ज़रूरत नहीं थी। क्योंकि पत्र में जो लिखा था उसके मुताबिक़ ही उनका जीवन था...* ***पप्पाजी ने सर्वप्रथम ताराबेन का स्वीकार किया। ये बात बहुत कुछ कह जाती है। ताराबेन छुपे रहते थे, लेकिन कइयों को समागम करवाया...***

*अब एकांतिक धर्म सिद्ध कर ही लेना है। मैं पप्पा का कार्य हूँ। बस सत्संगी कहे जाएँ, सिर्फ़ यही नहीं चाहिए। **उत्सव में सब आते हैं वो अच्छी बात है, पर कुछ पाना है-कुछ लेकर और कुछ छोड़ कर जाना है। क्या छोड़ना? तो, मन से तय करें कि ओहो! ताराबेन की मान-अपमान में समता रही।** कोई माने या न माने तो भी क्या? मैं तो प्रभु को मानती हूँ न! मेरी निष्ठा में बिलकुल फर्क़ न पड़े, ऐसी प्राप्ति करनी है। मेरे प्रभु जो करेंगे, अच्छा ही करेंगे...*

हमें चारों प्रकार के सुख लेने हैं। मैं क्या कर रहा हूँ उससे ज़रूरी है कि मुझे क्या करना चाहिए, जिससे कि प्रभु राज़ी हों... काका, पप्पा, बा इत्यादि से बल माँगेंगे, तो वे देते हैं... हम अपने जीवन से बाहर वालों के लिए पप्पा का परिचय बनें, रोज़ सुबह उठ कर ये रटना...

*अभी कुछ दिनों में नया साल आएगा, तो अब ठहराव करें कि कुछ पाना है। जैसे व्यापारी planning करता है, यूँ पप्पा कहते थे कि हमारा चैतन्यों का व्यापार है। हम व्यापारी हैं, इसलिए फ़ायदा ढूँढते रहना। **कितनी बहनें बढ़ीं वो नहीं, पर आध्यात्मिक रूप से कितने बढ़े?** पप्पाजी से प्रार्थना करना, तो वे सूझ देते रहेंगे।*

तत्पश्चात् **गुरुहरि पप्पाजी महाराज, प.पू. तारा बहन** की मूर्ति को तथा **प.पू. हंसा दीदी** को हार अर्पण करके, महाप्रसाद लेने के बाद दिल्ली से गईं बहनें सांकरदा मंदिर आईं। यहाँ **श्री मंदिरजी** व **ब्रह्मस्वरूप अक्षरविहारीस्वामीजी, प.पू. निष्कामजीवनस्वामीजी** की समाधि पर दर्शन करके, पाटोत्सव निमित्त बनाई बासुंदी का प्रसाद लिया।

फिर दिल्ली से by road आए संतगण-सेवक तथा बहनें उदयपुर जाने के लिए रवाना हुए। कुछ मुक्त वडोदरा से सायं की flight से दिल्ली के लिए रवाना हुए। पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी व पू. शीतलदासस्वामी एक दिन अधिक ठहरने वाले थे। सो, वे वडोदरा में रहते और बीमार होने के कारण अस्पताल में भर्ती हुए दिल्ली मंदिर के पुराने हरिभक्त **पू. हिम्मतभाई ठक्कर** से मिलने गए।

यहाँ से वे भी **पू. डाह्यालालभाई पंचाल** के नए घर पर पधरावनी करने गए। रात को हरिधाम लौटे और **29 दिसंबर** की सुबह **प.पू. दासस्वामीजी** का दर्शन-समागम करने के बाद दोपहर को प्रसाद लेकर, वडोदरा से देर शाम की flight से दिल्ली लौटे। By road गए संत, सेवक व बहनें भी रात को दस बजे तक उदयपुर से मंदिर पहुँच गए। यूँ, गुणातीत समाज के केन्द्रों में उत्सवों का लाभ-आशीर्वाद लेकर आने के बाद, **31 दिसंबर** को होने वाली **मध्य रात्रि महापूजा-उत्सव** की सेवाओं में लग गए।

31 दिसंबर 2025

'स्वामिनारायण महामंत्र' उद्घोष जयंती के मंगलकारी दिन मध्यरात्रि महापूजा...

जय स्वामिनारायण!
भगवान स्वामिनारायण की कृपा से नया साल-2026 सबको खुशहाली दे
और
प्रगट स्वरूपों के साथ हमारा संबंध पक्का होता जाए
इस हेतु रोज़ तीन मिनट विशेष धुन करने हम कृतनिश्चयी बनें...

31 दिसंबर यानी 2025 वर्ष की अंतिम रात्रि-'**स्वामिनारायण मंत्र**' **उद्घोष जयंती** के महामंगलकारी दिन **10:30 बजे** 'कल्पवृक्ष' हॉल में सब प.पू. गुरुजी की निश्रा में महापूजा का लाभ लेने के लिए एकत्र हुए। भगवान स्वामिनारायण को गहरे नीले रंग की सुंदर पोशाक पहनाई थी तथा उनके साथ गुणातीत परंपरा से स्वरूपों की मूर्तियों को सफ़ेद-हल्के गुलाबी रंग के कृत्रिम फूलों के हार अर्पण किए थे। आस-पास क्रीम रंग के कृत्रिम फूलों, हरी पत्तियों और सुनहरे रंग की गेंदों व घंटियों से सुशोभन किया था। सिंहासन के गुंबद पर लाल रंग के कपड़े पर श्वेत अक्षरों से **प.पू. गुरुजी** की ओर से निम्न आशीर्वाद लिखा था—

जय स्वामिनारायण!

भगवान स्वामिनारायण की कृपा से नया साल-2026 सबको ख़ुशहाली दे

और

प्रगट स्वरूपों के साथ हमारा संबंध पक्का होता जाए

इस हेतु रोज़ तीन मिनट विशेष धुन करने हम कृतनिश्चयी बनें...

दिव्यता से भरपूर वातावरण में **पू. मैत्रीशीलस्वामी** ने ठीक 12:00 बजे जब महापूजा संपन्न की, तो **सेवक पू. विश्वास** ने उच्च स्वर में सब भक्तों के अंतर की भावना व्यक्त करते हुए कहा—

हम सब कितने भाग्यशाली कि प्रभुधारक स्वरूपों की निश्रा में नए वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं...

We love Guruji...

गुजरात विचरण दौरान **प.पू. हंसा दीदी** ने अक्षरज्योति की बहनों को **प.पू. गुरुजी** के लिए हार दिया था। सो, नए वर्ष के आगमन पर **पू. भद्रायुभाई जानी** के छोटे सुपुत्र **पू. वैभव जानी** ने प.पू. गुरुजी को यह हार अर्पण किया। तब प.पू. गुरुजी ने अपनी प्रसादी का यह हार **सेवक पू. अभिषेक** द्वारा **पू. वैभव जानी** को पहनवा कर उसे स्मृति-आशीष दी। तत्पश्चात् श्री ठाकुरजी की आरती हुई और स्वामिनारायण महामंत्र की विशेषता बताता **प.पू. गुरुजी** का पहले का उपदेश ध्वनि मुद्रण के माध्यम से सुना। फिर **प.पू. गुरुजी** ने आशीष देते हुए कहा—

अब हम नए साल में enter हो रहे हैं। तो, सबसे पहले आप सबको नया साल मुबारक़ हो। प्रसादी का नोट अभिषेक से लेकर जाएँ...

दरअसल, दोपहर को प.पू. गुरुजी ने सेवकों से पूछा कि अपने पास एक पैसा है? सेवकों ने बताया—*एक-दो तो मिल जाएँगे, पर आपको कितने चाहिएँ?* फिर प.पू. गुरुजी ने कहा—*आज सबको धनलक्ष्मी के रूप में एक या दो रुपये की प्रसादी की नोट देना।* सो, इस विशिष्ट महापूजा के फल के रूप में सबने प्रसादी की लक्ष्मीजी लीं और बादाम पिस्ते के दूध, जलेबी व समोसे का प्रसाद लेकर करीब रात्रि डेढ़ बजे प्रस्थान किया।

13 दिसंबर 2025 - प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्योत्सव...

13 दिसंबर 2025 प.पू. गुरुजी का त्रैमासिक प्राकट्य पर्व

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज एवं गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति, उनकी आज्ञा, वचन और स्मृतियों को जीवन का आधार बना कर, उनकी आशीष से जंगम तीर्थ बन कर 59 साल से प.पू. गुरुजी अपने अप्रतिम भजन और संकल्प से उत्तर भारत के मुक्तों को श्री अक्षरपुरुषोत्तम युगल उपासना की निष्ठा दृढ़ कराने की गुरुभक्ति अदा कर रहे हैं। उनका दर्शन - समागम - शुभाशीष भक्तों के लिए जीवनडोरी के समान है और समय - समय पर उनके सान्निध्य में आयोजित होते उत्सव सबको प्रार्थना करने का अवसर प्रदान करते हैं।

जैसे कि वर्षों पहले **13 दिसंबर** को **गुरुहरि काकाजी महाराज** ने **प.पू. गुरुजी** को गुलाब का फूल देकर कहा था– ***जाओ, आज से तेरा नया जन्म!***

सो, गुरुहरि काकाजी महाराज के अनुग्रह का पुनर्स्मरण करने और उन्हें सांगोपांग धार कर जीते प.पू. गुरुजी की कृपा दृष्टि से अपने प्रकृति - स्वभावों को छुड़वा कर, नया जन्म करवाने की विनती करने की भावना से **मुक्त समाज 13 दिसंबर को प.पू. गुरुजी का प्राकट्य दिन मनाता है।** अतः सायं 7:30 बजे स्थानिक मुक्त कल्पवृक्ष हॉल में एकत्र हुए। भगवान स्वामिनारायण ने लाल रंग की सुंदर पोशाक एवं पाघ धारण की थी। सफेद और पीले रंग के कृत्रिम पुष्पों के तोरणों से श्री ठाकुरजी के सिंहासन को सुसज्जित किया गया था। प.पू. गुरुजी के आसन के पीछे कलात्मक बोर्ड लगाया था, जिस पर श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज सहित गुरुहरि काकाजी महाराज की मूर्ति अंकित थी और प.पू. गुरुजी के निरामय स्वास्थ्य व दीर्घायु की मंगल कामना करते हुए प्रार्थना रूप निम्न पंक्तियाँ लिखी थी–

एक अर्ज़ी है सुनो मेरे काकाजी, सदा निरामय रहें म्हारे गुरुजी।
संग उनके शताब्दी मनायें हम, एक हो के सुहृदभाव से जियें हम।
ये निशान रहे नज़रों में हर दम...

सभा के आरंभ में **पू. ऋषभ नरुला** ने प्रभु कृपा से प्राप्त हुए प.पू. गुरुजी को अंतर से याचना करते हुए गुजराती भजन '**मळयो तू मने कृपामां...**' प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् **पू. पंकज रियाज़ी** ने '**आज की ये शाम मेरे गुरुजी के नाम है...**' भजन प्रस्तुत किया। भजन के उपरांत, प्रासंगिक उद्‌बोधन के अनुक्रम में सर्वप्रथम **पू. मयंक चावला** ने बचपन से लेकर अब तक प.पू. गुरुजी की जो स्मृतियाँ संजोई, उसका संक्षिप्त वर्णन करते हुए माहात्म्य दर्शन कराया–

...एक बहुत Popular dialogue है कि खून का रिश्ता सबसे गहरा होता है, पर मेरे लिए clear है कि सत्संग का रिश्ता खून के रिश्ते से भी ऊपर है। पिछले 30 साल–अपने बचपन से मैं मंदिर में आ रहा हूँ, अब काफी बड़ा हो गया हूँ, पर यही मेरा घर है और यही मेरी life line है।

हम सब यहाँ मंदिर में आते हैं या दूसरे मंदिरों में दर्शन करते हैं, तो बहुत request करते हैं कि भगवान मुझे job दिलवा दो, यहां admission दिलवा दो, मेरी health ठीक कर दो और जब भगवान-संत 'हाँ' कहते हैं या सहमति देते हैं, तो हम खुश हो जाते हैं। लेकिन हम जो चाहते हैं, जब वो नहीं होता तो फिर क्या? जहाँ पर आप जाना चाहते हैं, जब वह दरवाजा बंद हो जाता है और आपकी life का plan फेल हो जाता है, तो फिर क्या?

अपने 30 सालों की तरफ देखूँ, तो मैंने एक बहुत ही divine सच्चाई देखी है कि जब-जब circumstances ने मेरे मुंह पर दरवाजा बंद किया है या कोई रास्ता रोका है, तो गुरुजी ने मेरे लिए उससे भी बड़ा gate खोला है। Every rejection is actually a divine redirection—यह मेरा सोचना है। गुरुजी मेरी life के हर step को divine upgrade करते गए हैं...

*मुझे बचपन से पढ़ाई का बहुत शौक़ रहा है और वो गुरुजी के साथ, उनके व्यवहार को देख कर ही हुआ है। गुरुजी के साथ मेरे जीवन की **पहली स्मृति 2003–2004 की है, जब 10th के board exams में Maths में मेरे 100 में से 100 marks आए। मैं गुरुजी को बताने आया, तो खुशी से एकदम सोफे से खड़े होकर उन्होंने ज़ोर से मुझे shake hand किया और कहा कि मेरा सपना था 100 में से 100 लाने का, तो मेरे नाती ने मेरा सपना पूरा कर दिया। वो hand shake मेरी life का एक anchor बन गया!***

*फिर 12th के बाद मुझे engineering के दो-तीन exam देने थे। **जिस दिन पहला exam देना था, उसी दिन मुझे appendicitis का pain हुआ।** अचानक surgery के कारण मैं exam नहीं दे पाया, तो मुझे बहुत बुरा लगा और रोने लगा क्योंकि मैं दो साल से इसकी तैयारी कर रहा था। उसी दिन Hospital से छुट्टी मिलने के बाद घर आया। गुरुजी को मेरे रोने के बारे में बताया होगा, तो उसी रात गुरुजी बहुत सारे सत्संगियों को लेकर घर पर आए और कहा—तुम चिंता मत करो, मैं हूँ न। उनके इतना कहने की देर थी कि तभी confidence आ गया। जो अगले बड़े exams देने थे, तब तक मेरे हाथों में चार नलियाँ लगी थीं। **जिस दिन exam था,***

तब चार नलियाँ दोनों हाथों में लगी थीं। Invigilator वह देख कर हैरानी से सोच रह थे कि क्या होगा? पर, उन्हें यह नहीं दिख रहा था कि मेरे साथ में कौन बैठा है! उस examination hall में काकाजी महाराज और गुरुजी मेरे साथ बैठ कर मेरा exam लिख रहे थे... Delhi College of Engineering में मुझे admission मिला। It's beyond medical science, it's divine grace और गुरुजी ने फिर prove कर दिया कि मैं हूँ न!

पढ़ाई पूरी करने के बाद मैं India की 19 best companies के final round interviews तक पहुंचा, लेकिन आगे कोई clear नहीं हुआ। मैं फिर गुरुजी के पास आया और उनसे पूछा—क्या मैं लायक नहीं हूँ, Am I not good enough? लेकिन, बाद में मुझे एहसास हुआ कि गुरुजी मेरी life में फिर divine upgrade लाना चाहते हैं। उसी साल एक नई french company ने India में अपने offices establish किए और उन्हें कोई immediately graduate चाहिए था, जो engineering के बाद USA जा सके। Again गुरुजी ने divine upgrade दिखाया कि 19 दरवाज़े इसलिए बंद हुए ताकि यह divine global gate खुल सके। USA में मैं नौकरी कर रहा था, लेकिन मेरा MBA करने का मन था। इंडिया में Indian IIM are the best MBA schools और मैंने उसके लिए भी दिन–रात मेहनत करी। मेरा score था 99.2%, मतलब इंडिया में 8% बच्चे ही थे जो मुझसे आगे थे और मुझे बहुत confidence था कि Ahmedabad, Bangalore के IIMs मुझे admission देंगे। उस समय समाधि पर अखंड परिक्रमा का कार्यक्रम था। मैं गुरुजी को बताने आया कि score तो आया है, पर कहीं भी admission नहीं हो रहा। यह तो cheating है, इतने अच्छे score पर भी rejection कैसे आ सकता है? गुरुजी ने smile करके कहा कि भजन करेंगे, कुछ अच्छा होगा-सब्र कर। जैसे कि IIMs में admission नहीं हुआ, तो मैंने और research की, तो मुझे global MBA के बारे में पता चला। मैंने गुरुजी को बताया कि मैं बाहर से MBA करना चाहता हूँ। गुरुजी की strength और help से Cornell University से MBA करके 2017 से मैं USA में ही job कर रहा हूँ। आप सबने news में सुना होगा कि immigration जो foreigners हैं, उनके लिए थोड़ा मुश्किल हो रहा है। मैंने वहां पर green card के लिए apply किया हुआ है। March के आस-पास एक letter आया, तो मुझे और मेरी wife को लगा कि हमारा green card आ गया है, जिसकी वजह से अब हम USA में easily we can continue working. But it was actually a rejection, उन्होंने मेरा case ही deny कर दिया। उस case के denial

का मतलब है कि मेरे पास 90 days हैं to leave the country. हमने जो घर खरीदा है, मेरी दो साल की बेटी है, वो वहां पर day care में रहती है, सब कुछ छोड़ कर हमें 90 days में USA से इंडिया आना पड़ेगा। **पूरी life uproot हो गई और आप imagine कर सकते हो कि how big of a shock, जो life आप जी रहे हो और बोलें—आप No–खत्म हो गए।**

फिर मैंने अभिषेक भैया को फोन किया कि गुरुजी को बताएँ। गुरुजी तब आराम में थे, तो अभिषेक भैया ने उस समय फोन पर 5 मिनट धुन कराई। 2004 में गुरुजी ने मुझे जो hand shake किया था, वो इस 5 मिनट की धुन में याद आ गया। गुरुजी ने मेरे साथ बैठकर जो मेरे exams लिखे वो याद आए और 19 rejections के बाद गुरुजी ने मुझे best company में job दिलाई, वह सब याद आया। धुन करते हुए मैंने बस यह कहा— गुरुजी, अब यह problem आपकी है, मैं तो surrender करता हूँ।

धुन खत्म होते ही, अभिषेक भैया ने idea दिया कि शिकागो में दिनकर अंकल हैं, तो आप सपनभाई से बात करो।

मैंने उनसे बात की, तो उन्होंने USA Government को जो letter लिखा, उसकी copy मैंने गुरुजी को दिखाने के लिए भेजी। सब न्यूज़ सुनते होंगे कि USA में सबको job से निकाल रहे हैं। जहां पर मैं रहता हूँ, वहां बहुत अचानक दिक्कतें हो गई हैं। मेरे वकील ने भी मुझे बोल दिया कि 0—1% probability है कि आपका कुछ होगा। पर, उस letter की वजह से **with in 37 days of receiving rejection मुझे USA Government से letter आया कि Sorry, हमने गलती से किया, your file is reopened.**

मैं आपको बता नहीं सकता कि How big of a miracle it is. जैसे मैं jobs के बारे में बता रहा था, तो because of this reason मेरी job भी चली गई थी। But even despite of this challenge अब मैं microsoft company में पहले से ऊँची post पर काम कर रहा हूँ। **Green card file का बंद होना, it was again not stop sign, बल्कि मेरे career को सबसे बड़ी jump देने के लिए stepping stone था।** Again our life is a continuation of divine upgrades... **काकाजी महाराज, गुरुजी, दीदी—इन सबकी ही पूरी planning है, they make us complete. मुझे सबको एक simple message देना है कि आपकी life में आपको लगता है कि कोई दरवाज़ा बंद है, काम अटक गया है, आप दर्द में हैं या कोई problem में हैं, तो आप गुरुजी पर भरोसा रखिए, उनके दर्शन करिए और मुस्कुराइए। Smile किसलिए? Because guruji is preparing for you something much better, because Kakaji**

Maharaj is plotting your victory. In this entire samaj ***में the end of the road कुछ नहीं होता, हम highway पर जाते हैं तो हमें लगता है कि वह road का end है, but it is just a bend which takes you to higher glory. विश्वास रखिए, picture अभी बाकी है—गुरुजी की शताब्दी साथ में मनानी है...***

तत्पश्चात् **पू. सुहृदस्वरूपस्वामीजी** ने स्वामिनारायण महामंत्र की विशेषता बताते हुए प.पू. गुरुजी के निरामय स्वास्थ्य के लिए निम्न प्रार्थना की—

थोड़े दिन पहले हम लोग पंजाब के भक्तों से मिलने गए थे। उस समय गुरुजी Physically साथ नहीं थे, लेकिन वे हमारे साथ ही थे ऐसा अनुभव हुआ। गुरुजी जब भी पंजाब के भक्तों के घर जाते हैं, तो भक्तों को जैसा आनंद, उमंग, उल्लास होता है, उसी भाव से उन्होंने सेवा की। चाहे पंजाब के हों या दिल्ली के भक्त हों, सबके जीवन में गुरुजी ने अपने भजन से ऐसा स्थान लिया है कि जीवन गुरुजीमय बना। *वहाँ एक बात याद की कि अभी जब* ***वशीभाई*** *आए थे, तो उन्होंने गुरुजी की तबीयत के बारे में बात करते हुए कहा था कि* ***बड़े संत हम भक्तों की कसर टालने के लिए अपनी देह पर सब ग्रहण करते हैं। सबको तीव्रता-गहराई से, आत्मा को झकझोर कर भजन कराने के लिए ऐसी बीमारी ग्रहण करते हैं।*** *सब भक्तों ने पिछले दो-ढाई महीने से ऐसा तीव्र भजन किया कि हमारे गुरुजी का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन अच्छा होता जा रहा है।* ***मेरी सब भक्तों से विनती है कि जिस दिन गुरुजी के बीमार होने का पता चला और सबने जिस प्रकार भजन करना शुरु किया, उसी प्रकार तीव्रता और मन की गहराई में जाकर प्रार्थना-भगवान को पुकार हम करते रहें, करते रहें।*** *ऐसे सत्पुरुषों को जो हमारी कसर टलवानी है, वो भजन से होगी। तो, बड़े पुरुष-गुरुजी को वो कराने के लिए चाबी (बीमारीरूपी शस्त्र) हाथ में न लेनी पड़े, इसलिए तीव्रता-लगन से भजन करते रहें। अभी* ***साहेब दादा*** *आए थे, तो उन्होंने भी यही कहा कि* ***जो भी क्रिया करें, वो भजन करते हुए करें। उन्होंने यह भी कहा था कि भगवान और संत की जैसी महिमा है, वैसी साथ में रहते सेवकों-मुक्तों की महिमा समझ कर सेवा-भक्ति किया करें। गुरुजी ने तो इस चीज़ के लिए अपना सारा जीवन खपा दिया।*** *मैं 45 साल से गुरुजी के पास हूँ, उनके जीवन का यही ध्येय है उनके संपर्क में आने वाला छोटा या बड़ा कोई भी हो, उन सबको जहाँ उपदेश देने की ज़रूरत हुई तो वह दिया और साथ ही साथ भजन खुद किया भी और सबसे करवाया भी है। मेरी तो एक ही प्रार्थना है कि* ***गुरुजी का जीवन निरामय रहे और हम सब मंदिर के संत, सेवक, सब हरिभक्त ऐसी तीव्रता से भजन करें कि गुरुजी को आगे ऐसा कोई उपाय न लेना पड़े, वे निरामय रह कर हमें दर्शन देते रहें...***

वक्तव्य के बाद **पू. ऋषभ नरुला** और **सेवक पू. विश्वास** ने **'कोई मोल न गुरु की सच्ची प्रीत का...'** भजन प्रस्तुत किया। कुछ वर्ष पहले प.पू. गुरुजी ने गुरुहरि काकाजी महाराज के स्मृति प्रसंगों की गुजराती पुस्तक **'अस्खलित मंगल कृपा धारा'** का निरुपण किया था। सो, भजन के बाद सबने ध्वनि मुद्रण के माध्यम से **प.पू. गुरुजी** का आशीर्वाद प्राप्त किया।

तदोपरांत **पू. उज्ज्वल अग्रवाल** ने भजन **'काकाजी–गुरुजी, मैं तेरा तू मेरा...'** प्रस्तुत करके सबको प्रभु की मूर्ति में लय और लीन कर दिया। भजन के बाद त्रैमासिक प्राकट्य दिन निमित्त सभी भक्तों की ओर से **पू. मयंक चावला व पू. स्वस्तिक चावला** ने प.पू. गुरुजी को हार अर्पण करके आशीर्वाद लिया। सभा के अंत में **केक** अर्पण हुआ और आज के मंगलकारी दिन का प्रसाद लेकर सभी ने प्रस्थान किया।

व्रतोत्सव सूची

1. दि. 27.2.'26, शुक्रवार – एकादशी, व्रत
2. **दि. 2.3.'26, सोमवार– होली, अनादि महामुक्त भगतजी महाराज की प्राकट्य तिथि**
3. **दि. 4.3.'26, बुधवार – धुलेन्डी, संतभगवंत साहेबजी की प्राकट्य तिथि**
   *(**अनुपम मिशन–मोगरी** में **3 मार्च** को मनाई जाएगी...)*
4. **दि. 7.3.'26, शनिवार – गुरुहरि काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन**
   *(वार्षिक **'भजन संध्या'** इस बार **प.पू. गुरुजी, प.पू. भरतभाई एवं प.पू. वशीभाई** की निश्रा में पंजाब-**जगरांव** में होगी...)*
4. **दि.13.3.'26, शुक्रवार – प.पू. गुरुजी का 89वाँ प्राकट्योत्सव**
   *(दिल्ली-अशोक विहार मंदिर में **सायं 5:30** बजे से मनाएँगे...)*
5. दि. 15.3.'26, रविवार – एकादशी, व्रत
6. दि. 19.3.'26, गुरुवार – चैत्र मास प्रारंभ, गुड़ी पडवा
7. **दि.26.3.'26, गुरुवार – श्री रामनवमी, भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती, व्रत**
8. दि. 29.3.'26, रविवार – एकादशी, व्रत
9. **दि.31.3.'26, मंगलवार – ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की भागवती दीक्षा तिथि**
10. **दि. 2.4.'26, गुरुवार – श्री हनुमान जयंती**
11. दि. 13.4.'26, सोमवार – एकादशी, व्रत
12. दि. 19.4.'26, रविवार – अखात्रीज
13. दि. 27.4.'26, सोमवार – एकादशी, व्रत
14. दि. 30.4.'26, सोमवार – नृसिंह जयंती

काकाजी तेरी मूर्ति निहारूं
उसी में लयलीन हो जाऊं
गुरुजी तेरी मूर्ति निहारूं
उसी में लयलीन हो जाऊं